सम्पादकीय
सोचें तो सही कि हम अपने बच्चों के लिए कैसी दुनिया छोड़कर जाना चाहते हैं ? 2

गायत्री उपासना से बदल रहा है बंदियों का जीवन 3

विश्व तंबाकू निषेध दिवस
पूरे देश में भव्य जनजागरण रैलियों के आयोजन हुए 6

विदेश समाचार
यू.के. में ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ 7

शान्तिकुञ्ज द्वारा 3550 बच्चों को दिए गए स्कूल बैग किट 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

मध्य प्रदेश प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जून 2025

वर्ष : 37, अंक : 24
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 जून 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-3

मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाये रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।

युग निर्माण सत्संकल्प का तीसरा सूत्र शरीर को स्वस्थ रखने की तरह ही मन को भी स्वस्थ, सुसंस्कृत रखने के लिए जागरूक और प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा देता है।

स्वस्थ शरीर में मन विकृत हो तो उद्दंडता, अहंकार प्रदर्शन, परपीड़ा जैसे निकृष्ट कार्य होने लगते हैं। आज अपराध जगत में जो कुछ हो रहा है, उसे अस्वस्थ मन का उपद्रव कहा जा सकता है। दूसरी ओर मन यदि अच्छी दिशा में मुड़ जाए, आत्मसुधार, आत्म-निर्माण और आत्म-विकास में रुचि लेने लगे तो जीवन में एक चमत्कार ही प्रस्तुत हो सकता है। कुविचारों और दुर्भावनाओं से मन गंदा, मलिन और पतित होता है। इस स्थिति से सतर्क रहने और बचने की आवश्यकता को अनुभव करना हमारा पवित्र कर्त्तव्य है।

स्वाध्याय एवं सत्संग

अपने गुण-दोषों की समीक्षा करो, गुण बढ़ाते-दोष घटाते चलो। अपनी अंतर्निहित सामर्थ्य को पहचानो, उसे जगाओ और सतत बढ़ाते जाओ। यही स्वाध्याय है। सद्गुरुओं और महापुरुषों के जीवन का अनुभव, ज्ञान तथा उनके आशीर्वाद के दिव्य प्रकाश में यह कार्य सरल हो जाता है। अतः सत्साहित्य पढ़ो, उसके दिव्य ज्ञान को जीवन में उतारते चलो, यही सच्चा स्वाध्याय है।

हम मानव जीवन की महत्ता को समझें और इस स्वर्ण अवसर के सदुपयोग की बात सोचें। यह आत्म-निर्माण की प्रेरणा देने वाले सत्साहित्य के स्वाध्याय से, प्रबुद्ध मस्तिष्क के सत्पुरुषों की संगति से, आत्म निरीक्षण एवं आत्म-चिंतन से हो सकता है। स्नेह, कृतज्ञता, सौहार्द्र, सहयोग आदि के विचारों को बार-बार दुहराया जाए, तो मन में कुविचारों और दुर्भावनाओं को जगह न मिलेगी।

परिस्थिति एवं वातावरण का मन पर असर होने लगता है। उस स्थिति में कुविचारों के विपरीत सशक्त सद्विचारों से उन्हें काटना चाहिए। स्वार्थपरता, धोखेबाजी, कामचोरी के विचार आएँ तो उन्हें श्रमशीलता और प्रामाणिकता के साथ प्रगति करने वालों के तथ्यपूर्ण चिंतन से हटायें। किसी पर क्रोध आए या द्वेष उभरे तो उसकी मजबूरी समझकर उसके प्रति करुणा, आत्मीयता के भाव से उसे धोया जा सकता है। यह विद्या सत्साहित्य के स्वाध्याय, सत्पुरुषों की संगति एवं ईमानदारी से किए गए आत्म-चिंतन से ही पाई जा सकती है।

आत्मिक विकास एवं आत्म शिक्षण के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग दो ही मार्ग हैं। आज की परिस्थितियों में स्वाध्याय ही सबसे सरल मार्ग है। उसी के द्वारा दूरस्थ, स्वर्गवासी या दुर्लभ महापुरुषों का सत्संग किसी भी स्थान, किसी भी समय, कितनी देर तक अपनी सुविधानुसार प्राप्त किया जा सकता है। उच्चकोटि के विचारों की पूँजी अधिकाधिक मात्रा में जमा किए बिना हम न तो अंतःकरण को शुद्ध कर सकते हैं और न उच्च मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। अतः स्वाध्याय को जीवन साधना का एक अंग समझकर अपने नित्य कर्मों में स्थान देना आवश्यक है।

स्वाध्याय के लिए समय निकालना ही पड़ेगा। आत्म-निर्माण करने वाली, जीवन की समस्याओं को सही ढंग से सुलझाने वाली पुस्तकें पूरे ध्यान, मनन और चिंतन के साथ पढ़ते रहना ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय और सत्संग में जितना अधिक समय लगाया जाता है, उतनी ही कुविचारों से सुरक्षा बन पड़ती है।

स्वाध्याय उन पुस्तकों का होना चाहिए, जो जीवन की विविध समस्याओं को आध्यात्मिक दृष्टि से सुलझाने में व्यावहारिक मार्गदर्शन करें और हमारी सर्वांगीण प्रगति को उचित प्रेरणा देकर अग्रगामी बनाएँ। अपने परिवार में अखंड ज्योति, युग निर्माण योजना अथवा प्रज्ञा पुराण के प्रेरणाप्रद अंश पढ़कर सुनाए जा सकते हैं।

सद्ग्रंथ जीते-जागते देवता होते हैं, जिनका स्वाध्याय करना, उनकी उपासना करने के समान ही है। भोजन से पूर्व साधना व शयन से पूर्व स्वाध्याय का क्रम सुनिश्चित रूप से चलना चाहिए। स्वाध्याय के बिना विचार परिष्कार नहीं, विचार परिष्कार के बिना विवेक नहीं, विवेक के बिना ज्ञान नहीं, जहाँ ज्ञान नहीं वहाँ अंधकार होना स्वाभाविक है। अज्ञानी न केवल इस जन्म में ही वरन् जन्म-जन्मांतरों तक, जब तक ज्ञान का आलोक नहीं पा लेता, त्रिविध तापों की यातना सहता रहेगा।

जिन्दगी जीनी हो तो इस तरह जियें

अखण्ड ज्योति, जनवरी 1973, पेज-33

जीवन अपने लिए एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसके प्रत्येक पृष्ठ से एक से एक बढ़ कर काम की शिक्षाएँ हमें पढ़ने को मिल सकती हैं। कल क्या बीती और कल का दिन कैसा गुजरा? इस पर गहराई से विचार करें तो उसमें अनेकों शिक्षाप्रद अनुभव मिल सकते हैं, जो दूसरों के उपदेश सुनने या विद्वानों की पुस्तकें पढ़ने से भी अधिक कारगर सिद्ध हो सकते हैं।

जीवन परमार्थ परायण हो

जीवन का रसास्वादन वे लोग नहीं कर पाते जो केवल अपने लिए ही जीते हैं। अपने लिए ही जीना, अपनी सुख-सुविधाओं की ही बात सोचना वस्तुतः मनुष्य का मानसिक बौनापन है। जिन्दगी को प्यार करने वाले लोग अपनी सुविधा, सुव्यवस्था के साधन जुटाने के साथ-साथ यह भी प्रयास करते हैं कि उन्हें दूसरों के लिए कुछ सोचने और करने का अवसर भी मिलता रहे।

उदार बनिये, समझदार भी

उदारता के साथ विवेक की नितान्त आवश्यकता है। मित्रता स्थापित करने के साथ वह सूक्ष्म बुद्धि भी सचेत रहनी चाहिए, जिससे उचित और अनुचित का, सही और गलत का वर्गीकरण किया जाता है। भावुक आतुरता के साथ यदि उदारता को जोड़ दिया जाये तो उससे केवल धूर्त ही लाभान्वित होंगे।

दूसरों के दुःख-दर्द में हिस्सा बँटाना चाहिए, पर वह उतना भावुकतापूर्ण न हो कि अपने साधन ही नष्ट हो जायें और अपना अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाय। आम तौर से उदार व्यक्तियों को ऐसी ही ठगी का शिकार होना पड़ता है। डूबते को उबारने के लिए किया गया दुस्साहस सराहनीय है, पर वह इतना आवेशग्रस्त न हो कि डूबने बाला तो बच न सके, उलटे अपने को भी दूसरे बचाने वालों की ओर निहारना पड़े।

जीवन का आनन्द मैत्री रहित, नीरस और स्वार्थी व्यक्ति नहीं ले सकते। इस तथ्य के साथ यह परिशिष्ट और जुड़ा रहना चाहिए कि सज्जनता के आवरण में छिपी हुई धूर्तता की परख करने की क्षमता भी उपार्जित की जाये। ऐसा न हो कि उदारता का कोई शोषण कर ले और फिर अपना मन सदा के लिए अश्रद्धालु बन जाये।

आत्म निर्भर बनिये

जो भी योजना बनायें, उसमें आत्म निर्भरता का ही प्रधान भाग रहना चाहिए। दूसरों का सहयोग तभी मिलता है, जब अपनी पात्रता और प्रामाणिकता सिद्ध कर दी जाये। भला कोई कैसे पसन्द करेगा कि किसी हवाई कल्पना की उड़ान में उड़ने वाले शेखचिल्ली के नीचे अपनी उंगली फँसा दे और अपनी कीमती सहायता को जोखिम में डालने का खतरा अंगीकार करे!

संघर्ष करें, सफलता पायें

कठिनाइयों से कोई बच नहीं सकता। जीवन इतना सरल नहीं है कि उसे गुपचुप बिना किसी झंझट के जिया जा सके। हमें वह साहस एकत्रित करना ही होगा कि आये दिन नाम-रूप बदल कर आने वाली कठिनाइयों का सामना और समाधान करने की सूझ-बूझ परिपक्व होती रहे। बिना झंझट का सरल और सुख-सुविधाओं से भरा पूरा जीवन क्रम एक मधुर कल्पना भर है, व्यावहारिक वास्तविकता नहीं। जीवन का निर्माण ही कुछ इस तरह हुआ है कि उस्तरे की तरह उस पर बार-बार धार रखने की रगड़ से वास्ता पड़ता रहे।

व्यस्त रहें, मस्त रहें

उत्साह और उल्लास बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि अपने सामने कोई दूरगामी लक्ष्य रहे और वहाँ तक पहुँचने के लिए सोचने और करने के लिए बहुत कुछ काम सामने रहे। जीवन का आनन्द तभी तक है, जब तक उसके सामने कुछ काम है। जिस दिन व्यक्ति पूर्णतया निश्चिंत होता है, उस दिन या तो वह परमहंस होता है या जड़।

हम अपने भाग्य के निर्माता स्वयं हैं। वर्तमान में जो परिस्थितियाँ सामने खड़ी हैं, उनमें यत्किंचित दूसरे भी निमित्त हो सकते हैं, पर अधिकतर अपनी ही रीति-नीति और गतिविधियों की प्रतिक्रिया सामने रहती है। भविष्य में भी जो कुछ होना या बनना है, उसमें भी अपने ही क्रिया-कलापों के प्रतिफल सामने होंगे। दूसरों का सहयोग या अवरोध तो एक सीमा तक ही हमारा भला-बुरा कर सकता है, तथ्य यह है कि अपना व्यक्तित्व ही हर दिशा में प्रतिध्वनि की तरह गूँजता है। किन्हीं असफलताओं के लिये दूसरों को दोष देने की अपेक्षा यह अधिक लाभदायक है कि हम अपनी उन त्रुटियों को ढूँढ़ें, जिनके कारण हमें सफलता से वंचित रहना पड़ा।

सद्गुण हैं सच्ची सम्पति

सद्गुण ही किसी को ऊँचा उठा सकते हैं और आगे बढ़ा सकते हैं। यह रहस्य जिन्हें विदित हो सका, वे अपने को परिष्कृत करने में जुटते हैं, ताकि एक के बाद दूसरी उत्कर्ष की परतें खुलती चलें।

जीवन शैली नहीं बदली तो हमें पर्यावरण संकट के भयंकर परिणाम भोगने होंगे

हम सोचें तो सही कि हम अपने बच्चों के लिए कैसी दुनिया छोड़कर जाना चाहते हैं ?

प्रदूषण, एक गहन समस्या

परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी अपनी पुस्तक 'उपभोग नहीं, उपयोग' में लिखते हैं,

''जीवन उतना जटिल नहीं है, जितना कि बन जाता है या बना दिया गया है। हँसी-खुशी की संभावनाओं से वह भरा-पूरा है। शरीर और मन की संरचना इस प्रकार हुई है कि वह बाहर के तनिक से साधनों की सुविधा प्राप्त हो जाने पर सहज ही स्वस्थ और सुखी रह सकता है। अति स्वल्प साधनों से अन्य जीवधारी अपना संतोषपूर्ण व्यवस्था क्रम चलाते रहते हैं, न उन्हें रुग्णता सताती है और न खिन्नता। यदि उन्हें सताया न जाए, तो शरीर यात्रा की प्रचुर परिमाण में उपलब्ध साधन सामग्री से ही वे अपना काम चला लेते हैं और हँसी-खुशी के दिन काटते हैं।''

समय की विडंबना देखिये कि आज लोगों के पास साधन-सुविधाओं का अंबार लगा है, इसके बावजूद जीवन में सुख-चैन नहीं है। तथाकथित समझदारों की नासमझी ने असंख्य समस्याएँ खड़ी की हुई हैं। निरंतर बढ़ते जा रहे पर्यावरण प्रदूषण के कारण हो रहे जलवायु परिवर्तन ने धरती पर जीवन के अस्तित्व का ही संकट खड़ा कर दिया है। औद्यागिक क्रान्ति के कारण वायुमंडल में कार्बन डाईऑक्साइड का स्तर पहले की तुलना में 50% अधिक बढ़ गया है। शहरी क्षेत्रों में निरंतर बढ़ता वायु प्रदूषण स्वास्थ्य संबंधी जटिल समस्याएँ पैदा कर रहा है। औद्योगिक अपशिष्ट, कृषि रसायन और घरेलू गंदगी से नदियाँ, झीलें और भूजल दूषित हो रहे हैं, साथ ही जल की बढ़ती माँग से जल स्तर में गिरावट आ रही है। बेंगलुरु जैसे कई शहरों में तो पेयजल का इतना गहरा संकट उत्पन्न हो रहा है कि गर्मी के दिनों में पानी के अभाव में कम्पनियाँ अपने कर्मचारियों को दफ्तरों में बुलाने की बजाय अपने गृह नगर से ही 'वर्क फ्रॉम होम' का निर्देश दे रही हैं। वन्यजीवों की प्रजातियाँ तेजी से विलुप्त हो रही हैं। रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से भूमि बंजर होती जा रही है।

इन दिनों सामूहिक आत्महत्या की ओर बढ़ती दुनिया को गंभीर संकट से बचाने के लिए अत्यंत प्रभावशाली उपाय किए जाने की आवश्यकता है। प्रसन्नता की बात है कि भारत जैसे संवेदनशील देशों में विद्वानों, विचारशीलों का ध्यान इस ओर है। सरकार और सामाजिक संगठनों द्वारा पर्यावरण संकट के समाधान के लिए प्रयास भी किए जा रहे हैं। अपने गायत्री परिवार सहित कई संस्थाओं और सरकार द्वारा प्रतिवर्ष बृहद् स्तर पर वृक्षारोपण किया जाता है। इसके प्रभाव से कुछ क्षेत्रों में वनों का अनुपात बढ़ने भी लगा है, लेकिन समस्या इतनी विकराल है कि इन प्रयासों को आटे में नमक जैसा ही कहा जा सकता है। आवश्यकता समस्या की जड़ तक पहुँचने की है और उसके कारण का निवारण करने की है। शरीर में फोड़े-फुंसी की समस्या बढ़ जाये तो मरहम-पट्टी से काम नहीं चलता, तब रक्तशोधन की आवश्यकता पड़ती है।

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का दर्शन

'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' इस युग को परम पूज्य गुरुदेव की अनूठी देन है। निःसंदेह वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के माध्यम से उनके द्वारा धर्मतंत्र को रूढ़ियों, अंधविश्वासों, मूढ़ मान्यताओं एवं कुरीतियों से निकालकर उसकी शाश्वत सत्यता, विश्वसनीयता और प्रामाणिकता को सिद्ध किया गया है। समय के साथ धर्मतंत्र में आ गई विकृतियों के कारण वैज्ञानिक सोच वाले विचारवानों ने धर्म को अफीम की गोली बताना आरंभ कर दिया था, उनकी मान्यताओं में आमूलचूल परिवर्तन किया है, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले लोगों में अध्यात्म के प्रति आस्था बढ़ाई है। दिन-प्रतिदिन हो रही वैज्ञानिक प्रगति ने अब तो शरीर, मन, विचार और भावनाओं पर पड़ने वाले अध्यात्म के प्रभाव के रहस्यों का उद्घाटन भी आरंभ कर दिया है।

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के प्रतिपादन का एक संदेश जीवन में अध्यात्म और विज्ञान के बीच संतुलन स्थापित करना भी है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ बढ़ते जा रहे इस असंतुलन ने ही सारी की सारी समस्याओं को जन्म दिया है। बरगद, पीपल जैसे वृक्ष इसीलिए विशालकाय और दीर्घजीवी होते हैं, क्योंकि उनकी जड़ें उनके आकार के अनुपात में गहरी और फैली हुई होती हैं। भवन बनाते समय नींव का ध्यान न रखा जाये और मंजिल पर मंजिल चढ़ाते रहा जाये तो वह दुर्घटना को ही जन्म देगी। यही स्थिति वर्तमान समय में जीवन में अध्यात्म और विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में घटित हो रही है।

इन दिनों सुख-सुविधाएँ तो खूब बटोरी जा रही हैं, किन्तु ईश्वर प्रदत्त जिन आंतरिक विभूतियों से सुख-सुविधाओं का अनुभव होता है, उनकी घोर उपेक्षा हो रही है। सज्जा बढ़ रही है, पर आँखों की दृष्टि क्षीण होती जा रही है। रसोईघर में छत्तीस भोग बन रहे हैं, लेकिन हाजमा सामान्य भोजन पचाने का भी नहीं है। घर में एक से एक आरामदायक वाहन हैं, पर घुटनों की पीड़ा ने चार कदम चलने की सामर्थ्य नहीं रहने दी। काश! सुविधा और शारीरिक सामर्थ्य के बीच संतुलन रखा गया होता तो प्रकृति की सुंदरता ही मन को गद्गद कर रही होती, जायकेदार व्यंजनों की बजाय सामान्य पौष्टिक भोजन में भी अधिक रस आता और शरीर को बलशाली बनाता। मन दुखी, तनावग्रस्त हो तो सुविधाएँ सुख नहीं दे पातीं।

वर्तमान युग का पर्यावरण संकट का बहुत बड़ा कारण आत्मिकी की उपेक्षा और सुख-सुविधाओं की बे-लगाम चाहत को माना जा सकता है। इन दिनों धरती का तापमान बढ़ता ही जा रहा है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, नदियाँ सूखती जा रही हैं। WHO के अनुसार, दुनिया की 90% आबादी आज प्रदूषित हवा में साँस लेती है। इस आत्मघाती संकट का मूल कारण हमारी जीवन शैली ही तो है। इस भीषण पर्यावरण संकट के निवारण के लिए अनेक उपाय भी किये जा रहे हैं, लेकिन हमने अपनी जीवन शैली नहीं बदली तो समाधान असंभव-सा ही प्रतीत होता है।

सादा जीवन-उच्च विचार

परम पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन और विचारों से आदर्श जीवन के अनेक सूत्र बताए हैं। आज अधिकांश लोग अशांत और अभावग्रस्त दिखाई देते हैं। **पूज्य गुरुदेव ने कहा, ''प्रसन्न रहने के दो उपाय-आवश्यकताएँ कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बैठायें।''** इस महत्त्वपूर्ण सूत्र को अपनाने वाला अत्यंत सामान्य-सी परिस्थितियों में भी आनन्दपूर्ण जीवन जी सकता है। **मनःस्थिति को संतुलित रखने की सामर्थ्य हो, तो कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अविचलित और आनन्दमय रहा जा सकता है।**

'सादा जीवन-उच्च विचार' सफल और सुखी जीवन के लिए परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताया गया एक अमोघ मंत्र है। इस सूत्र को अपनाने वाले महापुरुष बनते चले गए। राष्ट्र के महानायक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, विनोबा भावे, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि इसका जीता-जागता उदाहरण हैं।

परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी युग प्रवर्तक ऋषि हैं, किन्तु उनकी सादगी पूरी दुनिया के लिए आदर्श है। लब्ध प्रतिष्ठित बैरिस्टर मोहनदास करमचंद गाँधी ने देश के आम व्यक्ति की पीड़ा को अनुभव करते हुए आधी धोती पहनी और चादर ओढ़ी तो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी बन गए।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम राष्ट्रपति बनने के बाद भी अपने सामान्य कमरे में ही रहते थे। अल्बर्ट आइंस्टाइन एक ही तरह के कपड़े पहनते थे और कहते थे कि इससे निर्णय लेने की समस्या कम हो जाती है। नेल्सन मंडेला दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बनने के बाद भी अपने छोटे-से घर में रहते थे और सादा भोजन करते थे। वारेन बफेट दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में से हैं, लेकिन वे उसी घर में रहते हैं जो सन् 1958 में उन्होंने $31,500 में खरीदा था। स्टीव जॉब्स कहते थे कि सादगी ही अंतिम परिष्कार है।

आवश्यकताएँ सीमित हों

आज विकास की परिभाषा ही बदल गयी है। सुख-सुविधाओं को बड़प्पन और विकास का पैमाना मान लिया गया है, लेकिन जिस अनुपात में सुविधाएँ बढ़ रही हैं, उसी अनुपात में उनका पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ रहा है।

घटते वन : जनसंख्या वृद्धि और वाहनों की निरंतर बढ़ती संख्या के अनुपात में देश में सड़क व रेलमार्ग तथा औद्योगिक क्षेत्रों का जाल फैलता ही जा रहा है। इनके निर्माण के लिए लाखों की संख्या में वृक्ष काटे जा रहे हैं। इसी प्रकार वन्य क्षेत्रों में बिजली, पानी जैसी विकास की अनेक परियोजनाओं के लिए वनों की कटाई अनिवार्य हो जाती है।

गत वर्ष से बारां (राजस्थान) के शाहबाद वन क्षेत्र में प्रस्तावित 1800 मेगावाट का पम्प स्टोरेज प्रोजेक्ट पर्यावरण प्रेमियों के घोर विरोध का कारण बना हुआ है। इस प्रोजेक्ट के लिए जैव विविधता वाले इस अत्यंत सघन वन क्षेत्र की 400 हेक्टेयर भूमि में एक लाख से अधिक वृक्ष काटे जाने हैं। परिजनों ने बताया कि यह घोषित संख्या है, वास्तव में कई लाख पेड़ कटेंगे। अनेक सामाजिक संगठनों द्वारा इसका प्रचंड विरोध किया जा रहा है।

कंक्रीट के जंगल : आज से कुछ दशक पूर्व तक मार्गों के दोनों ओर वृक्षों की सघन छाया हुआ करती थी, आज उन वन और वृक्षों के स्थान पर कंक्रीट के जंगल नजर आते हैं। बढ़ती आबादी के साथ शहरों का मोटापा बढ़ रहा है। अब गाँवों में भी प्राकृतिक संसाधनों से बने घरों की चाह नहीं रही, हर किसी को आरसीसी के पक्के मकान चाहिए। सड़कों पर चलते जाइये, गाँव-नगरों का अंत ही दिखाई नहीं देता।

सुविधा नहीं बड़ी समस्या है 'यूज़ एण्ड थ्रो' : कभी मिट्टी, काँच और धातु के बर्तनों का प्रचलन हुआ करता था, लेकिन लोगों की सुविधा के लिए मिट्टी, काँच और धातु के बर्तनों की जगह प्लास्टिक ने ले ली है। कपड़े के थैले इतिहास बन गए। सरकार के प्रयासों के बावजूद प्लास्टिक की थैलियाँ कम होने का नाम नहीं ले रहीं, बल्कि पर्यावरण के लिए बहुत बड़ा संकट खड़ा कर रही हैं। हर क्षेत्र में गंदगी का ढेर है, सड़कों के दोनों ओर प्लास्टिक की पन्नियाँ बिखरी हैं, जानवर इन्हें खाकर बीमार हो रहे हैं, मर रहे हैं। नालियाँ अवरुद्ध हो रही हैं। बरसात में जलभराव हो रहा है। जलाशयों का जल पीने योग्य नहीं रहा। थोड़ी-सी सुविधा के चक्कर में मानवता के समक्ष बहुत बड़ा संकट उपस्थित हो गया है।

समाधान या नयी समस्या?

पेट्रोल-डीजल का विकल्प बैटरी वाले वाहनों के रूप में तलाशा जा रहा है। पर्यावरणविदों का मानना है कि आने वाले दिनों में इनमें प्रयोग में लाई जाने वाली लिथियम बैटरी का निस्तारण भी पर्यावरण के लिए बहुत बड़ी समस्या होने वाली है।

फैशन परस्ती - फिजूलखर्ची रुके

फैशनपरस्ती भी एक बड़ी समस्या है। झूठी शान और दिखावे के बढ़ते प्रचलन ने आवश्यकताओं को अनंत गुना बढ़ा दिया है। जहाँ तन ढकने के लिए चार-छः जोड़ी कपड़े पर्याप्त होते हैं, वहाँ एक बार पहने कपड़ों को दोबारा न पहनने का फैशन-सा चल पड़ा है। सामान्य से संस्कार समारोहों ने अब झूठी शान के लिए करोड़ों, अरबों रुपये के उत्सव का रूप ले लिया है। यह बदलती जीवन शैली व्यक्ति को सच्चाई और अच्छाई से कहाँ जीने देगी।

ज्ञात हो कि बहुत-से सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माण के लिए जीवों की क्रूर हत्या की जाती है। मांसाहार ने भी पर्यावरण संकट को बढ़ावा दिया है।

पर्यटन विवेकयुक्त हो

पर्यटन के लिए सौंदर्यीकरण और सुविधा संवर्धन प्रशंसनीय है, किन्तु राष्ट्रीय सुरक्षा कारणों से तथा रोजगार में वृद्धि की दृष्टि से देवात्मा हिमालय जैसे संवेदनशील स्थलों में जो बड़े पैमाने पर छेड़छाड़ हो रही है या करनी पड़ रही है, वह अत्यंत चिंताजनक है।

अपनी जीवन शैली बदलें

पर्यावरण संकट इस युग का बहुत बड़ा संकट है। यह धरती पर जीवन के अस्तित्व को ही चुनौती देने वाला है। इंटरगवर्नमेण्टल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (IPCC) की रिपोर्ट थी कि बेतहाशा बढ़ते ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के कारण सन् 2040 तक वैश्विक तापमान औद्योगिक क्रांति के पहले के स्तर से 1.5°C तक बढ़ सकता है। इससे समुद्री जल स्तर में एक से दो फीट की वृद्धि हो सकती है। मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, न्यूयॉर्क, लंदन, बैंकॉक जैसे शहरों के कई हिस्से नियमित बाढ़ का सामना करेंगे। फसलों का उत्पादन घटेगा। भयानक प्राकृतिक आपदाएँ आएँगी। लेकिन पब्लिक ब्रॉडकास्टिंग सर्विसेस (यू.एस.) के अनुसार वर्ष 2024 में ही पूरे वर्ष तापमान 1.5°C अधिक रहा। फाइनेंशियल टाइम्स एवं द गार्जियन के अनुसार अप्रैल 2025 तक के विगत 12 महीनों का औसत तापमान 1.58°C ऊपर रहा, जो अत्यंत चिंताजनक है।

यक्ष प्रश्न यह है कि हम अपने बच्चों के लिए कैसी दुनिया छोड़कर जाना चाहते हैं? यदि हम उज्ज्वल भविष्य चाहते हैं तो हमें अपनी जीवन शैली में आमूलचूल परिवर्तन करने की आवश्यकता है। परम पूज्य गुरुदेव के कथनानुसार हमें वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को अपनाना चाहिए। अपना अंतरंग परिष्कृत और मजबूत हो। जिस आनन्द की चाह में हम साधन-सुविधाएँ बटोरने में जीवन खपा रहे हैं, उससे हजारों गुना तृप्ति, तुष्टि और आनन्द हम 'सादा जीवन, उच्च विचार' की जीवन शैली को अपनाते हुए भी प्राप्त कर सकते हैं। भटकें नहीं, समझदार बनें, यही जीवन का राजमार्ग है।

गायत्री उपासना से बदल रहा है बंदियों का जीवन

दीक्षा लेकर, यज्ञोपवीत धारण कर अपराध का मार्ग त्याग रहे हैं सैकड़ों बंदीगण

उन्नाव। उत्तर प्रदेश

दिनांक 11 मई 2025 को गायत्री परिवार की जिला समन्वय समिति, उन्नाव द्वारा जिला कारागार में पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का बृहद कार्यक्रम कराया गया। इसमें कारागार में निरुद्ध 76 बंदियों ने अपराध के रास्तों को छोड़ कर अच्छाई के रास्ते पर चलने की शपथ ली। सभी को सामूहिक रूप से गायत्री मंत्र की दीक्षा भी दिलाई गई।

कारागार अधीक्षक श्री पंकज कुमार सिंह ने दीप प्रज्वलन, देवपूजन के साथ यज्ञ का शुभारंभ किया। श्री शिवप्रसाद शर्मा ने युगऋषि की मार्मिक प्रेरणाओं के साथ कर्मकाण्ड का संचालन किया। गुरुदीक्षा लेने वाले सभी बंदियों को लैमिनेटेड देवस्थापना चित्र, गायत्री चालीसा और एक-एक रुद्राक्ष की माला दी गई। अनेक बंदियों ने बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञोपवीत धारण किये। बंदियों के लाभार्थ 500 से अधिक अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ कारागार प्रशासन को दी गईं।

आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में रुचि रखने के कारण कारागार में काफी लोकप्रिय कारागार अधीक्षक श्री पंकज सिंह की अनुमति और विशेष सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। यज्ञ में उप कारापाल श्री भगवानदीन सहित अनेक कर्मियों, वकीलों तथा गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

गायत्री परिवार के जिला समन्वयक श्री नरेश सिंह ने बताया कि गायत्री परिवार द्वारा कारागार में ऐसा ही एक कार्यक्रम नवम्बर 2024 में भी आयोजित किया गया था, जिसमें बड़ी संख्या में बंदियों ने पान मसाला का सेवन तथा धूम्रपान न करने की प्रतिज्ञा की थी। इस कार्यक्रम का कारागार प्रशासन पर अच्छा प्रभाव देखा गया।

बाँये उन्नाव में और दायें कोडरमा में गायत्री मंत्र की दीक्षा ले रहे बंदीगण

बंदीगृह में सत्संकल्प पाठ

कोडरमा। झारखण्ड

शक्तिपीठ झुमरी तिलैया के महिला मंडल द्वारा कोडरमा कारागार में 28 अप्रैल को गायत्री यज्ञ कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें लगभग 40 बंदियों ने भाग लिया। जिला समन्वयक श्री राजेंद्र साव ने गायत्री मंत्र, गुरुदीक्षा एवं यज्ञ के महत्त्व को सरल और प्रभावी ढंग से समझाया। उनकी प्रेरणा से 32 बंदियों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा लेकर नियमित गायत्री मंत्र जप का संकल्प लिया।

प्रतिभागियों को गुरुदीक्षा सेट, अखंड ज्योति, युग निर्माण योजना पत्रिका एवं प्रज्ञा अभियान पाक्षिक भी प्रदान किए गए। यज्ञ के उपरांत सभी ने युग निर्माण सत्संकल्प का पाठ किया। इस अवसर पर झुमरी तिलैया से विनोद बरनवाल एवं दशारो खुर्द से सरजू यादव भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम से बंदियों में नए उत्साह और आस्था का संचार हुआ। उन्होंने पुनः ऐसे प्रेरणादायी आयोजनों की इच्छा व्यक्त की।

सेवा-समर्पण

पार्थिव देह भी समाजसेवा में समर्पित कर दी

स्व. सुरेश विजयवर्गीय

यह बूंदी मेडिकल कॉलेज को मिला प्रथम देहदान था।

हिण्डोली, बूंदी। राजस्थान

गायत्री परिवार, बूंदी के मुख्य ट्रस्टी के रूप में सक्रिय रहे स्वर्गीय सुरेश कुमार विजयवर्गीय की पार्थिव देह 20 मई 2025 को बूंदी मेडिकल कॉलेज को दान कर दी गई। देहदान से पूर्व गायत्री मंदिर से होते हुए बैंड-बाजे के साथ उनकी अंतिम यात्रा निकाली गई, जो मेडिकल कॉलेज पहुँची। वहाँ डॉ. विजय नायक ने पार्थिव शरीर को विधिवत स्वीकार किया। इस अवसर पर मेडिकल कॉलेज की ओर से परिजनों को प्रशस्ति पत्र भेंट कर उनके अनुकरणीय निर्णय के लिए सम्मानित किया गया।

स्व. सुरेश कुमार विजयवर्गीय जी ने 6 वर्ष पूर्व रेडक्रॉस सोसाइटी की प्रेरणा से देहदान का संकल्प लिया था। स्व. सुरेशजी की धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलता देवी सहित तीनों पुत्र योगेन्द्र, चंद्रप्रकाश एवं दिनेश तथा पुत्री आभा व अनीता, तीनों पुत्रवधु और दोनों दामाद ने उनके इस संकल्प का सम्मान करते हुए सहर्ष देहदान की प्रक्रिया पूरी की। शाइन इंडिया फाउंडेशन के इदरीस बोहरा की प्रेरणा से नेत्रदान भी सम्पन्न हुआ।

स्व. विजयवर्गीय जी राज्य सरकार में लेखाधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए थे। उन्होंने सन् 1983 में परम पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली थी। तभी से उनका पूरा परिवार मिशन के लिए पूरी तरह से समर्पित रहा है।

गायत्री परिवार का गौरव

राजेश पंचाल को मिला 'शौर्य चक्र' सम्मान

महामहिम राष्ट्रपति महोदया जी से सम्मान ग्रहण करते गायत्री परिवार के श्री राजेश पंचाल

खमेरा, बांसवाड़ा। राजस्थान

नई दिल्ली में 22 मई को महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा वीरता पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर वनवासी क्षेत्र खमेरा निवासी सीआरपीएफ के सहायक कमांडेंट राजेश पंचाल ने महामहिम से सम्मान प्राप्त कर अखिल विश्व गायत्री परिवार और पंचाल समाज को गौरवान्वित किया।

माननीया राष्ट्रपति जी द्वारा श्री राजेश पंचाल को नक्सलियों से मुठभेड़ में अदम्य साहस दिखाने पर शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया है। उनके हाथ में गोली लगने के बावजूद उन्होंने नक्सलियों को मार गिराया था।

श्री राजेश पंचाल जी को राष्ट्रभक्ति और वीरता के संस्कार विरासत में मिले हैं। आपके दादाजी स्वतंत्रता सेनानी रहे। वे गायत्री परिवार के उन सौभाग्यशाली लोगों में से थे, जिन्हें गुरुदेव-माताजी का भरपूर प्यार मिला। उन्हें परम वंदनीया माताजी के हाथ की रोटी खाने का अवसर भी मिला। पिता श्री केशव पंचाल गायत्री शक्तिपीठ घाटोल से जुड़कर मिशन के कार्यों के लिए समर्पित रहे हैं।

एक दुःखद प्रसंग : पिता को खो दिया

श्री राजेश पंचाल 20 मई की रात को अपने पिता श्री केशव चंद्र पंचाल के साथ शौर्य पुरस्कार लेने दिल्ली के लिए रवाना हुए, लेकिन रास्ते में कोटा के पास हृदयाघात से उनके पिता का निधन हो गया, जिसके कारण उन्हें खमेरा लौटना पड़ा। अपने पिता का अंतिम संस्कार करने के उपरांत वे अविलंब दिल्ली पहुँचे थे।

युवा प्रकोष्ठ के कार्यकर्त्ताओं ने किया श्रमदान

सदियों पुराने कुएँ से गंदगी निकली, लोगों को किया जागरूक

जतारा (मध्य प्रदेश) : शुक्रवार, दिनांक 16 मई को गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ के कार्यकताओं ने पत्रिका के अमृतं जलम् अभियान के साथ मिल कर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के समीप स्थित कुंए की सफाई की, कुंए में कई वर्षों से जमे कचरे को बांस में जाल बांध कर बाहर निकाला गया, आस-पास बसे लोगों से कुएं के संरक्षण की अपील की।

नगर के बीचोबीच बना यह कुआं वर्षों पुराना था तथा नगर के लोग इसके जल का उपयोग पीने के लिए करते थे। कई वर्षों तक उपयोग में न आने के कारण कुएं पर गंदगी की परतें जमती गईं। जतारा युवा प्रकोष्ठ के कार्यकर्ता, पत्रिका के अमृतम् जलम् अभियान के साथ मिल कर आस-पास के जलस्त्रोतों को सूखने से बचाने एवं उनके संरक्षण के लिए अथक प्रयासों में लगे हैं, साथ ही आम जनता को जलस्त्रोतों के संरक्षण के लिए जागरूक भी करते हैं।

इस अभियान में श्री मंगलसिंह तोमर, श्री शकील, श्री राधेश्याम, श्री राम सिंह सहित अन्य युवा भी शामिल रहे।

सेवाकार्यों के लिए मिला मुख्यमंत्री उत्कृष्टता सम्मान

उज्जैन। मध्य प्रदेश : मध्यप्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी द्वारा भोपाल में आयोजित एक गरिमामय समारोह में उज्जैन निवासी डॉ. आशीष सदाशिव पालीवाल को 'मुख्यमंत्री उत्कृष्टता सम्मान' प्रदान किया गया। उन्हें यह सम्मान स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रदान किया गया है।

मुख्यमंत्री जी से सम्मान ग्रहण करते डॉ. आशीष पालीवाल

डॉ. आशीष विगत 22 वर्षों से उज्जैन में ट्रॉमा यूनिट (ऑर्थोपेडिक एवं न्यूरो सर्जरी) में अपनी उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। आपने कोरोना काल में जिला अस्पताल में सेवाएँ देते हुए कई निर्धन मरीजों का निःशुल्क न्यूरो एवं ऑर्थो सर्जरी से संबंधित इलाज भी किया था। वे MBBS के विद्यार्थियों को शिक्षा एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में भी योगदान दे रहे है।

डॉ. आशीष पालीवाल को वर्ष 2023 में राज्य सरकार द्वारा सेवा भूषण सम्मान भी प्रदान किया गया था।

डॉ. आशीष पालीवाल सेगाँव, जिला खरगोन के मूल निवासी हैं। उनके पिता गायत्री परिवार के प्राणवान कार्यकर्त्ता रहे हैं। छोटा भाई बैंगलुरु में मिशन की गतिविधियों में सक्रिय योगदान दे रहा है। पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा और आशीर्वाद से ही डॉ. आशीष के जीवन में सेवाभावना कूट-कूट कर भरी है।

पैरामेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए कार्यशाला

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी लखनऊ के कलाम सेंटर में दिनांक 24 मई 2025 को पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट के छात्र-छात्राओं के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई, विषय था 'समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन एवं भ्रूण विकास'। गायत्री परिवार के 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान की प्रान्तीय समन्वयक डॉ. संगीता सारस्वत ने कार्यशाला के विषय एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला। श्रीमती सुमित्रा श्रीवास्तव, श्रीमती अर्चना वर्मा एवं श्री प्रेम दत्त सारस्वत द्वारा क्रमशः आहार विज्ञान, योग विज्ञान एवं समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन विषय पर हुए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शोध कार्यों की जानकारी के साथ गर्भस्थ शिशुओं के समग्र विकास के संदर्भ में मार्गदर्शन दिया। लगभग साढ़े चार सौ छात्र-छात्राओं ने इसमें भाग लिया।

नन्हें बच्चों ने चित्रकारी से दिया पर्यावरण संरक्षण का सन्देश

प्रतियोगिता के विजेताओं का हो रहा सम्मान

ग्वालियर। मध्य प्रदेश

22 मई, 2025 को मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड एवं गायत्री परिवार के संयुक्त तत्त्वावधान में गायत्री प्रज्ञापीठ, कंपू के सभागार में 'विश्व में प्लास्टिक प्रदूषण का उन्मूलन' थीम पर चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें प्राइमरी, मिडल व हायर सेकेंडरी स्कूल के बच्चों ने भाग लेते हुए समाज को पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के लिए अपने मनोभावों को उकेरा। गायत्री चेतना केन्द्र पिंटू पार्क मुरार में भी पर्यावरण एवं जल संरक्षण विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 6 से 16 वर्ष के बच्चों ने भाग लिया।

मध्य प्रदेश प्रदूषण बोर्ड के मुख्य प्रबंधक श्री जगदीश पटेल ने इन विषयों पर बच्चों को प्रेरक संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हमें 'यूज़ एंड थ्रो' की संस्कृति से बचना होगा, जो वर्तमान प्रदूषण के लिए बहुत हद तक उत्तरदायी है।

इस कार्यक्रम में गायत्री परिवार की डॉक्टर आरती सिंह, श्रीमती कल्पना गुप्ता, श्रीमती सुमन परिहार, श्री अरविंद सिंह भदोरिया एवं श्री राकेश सिंह का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता में प्राइमरी स्कूल के बच्चों में अध्याय गुप्ता, आदित्य बनौरिया एवं मनीष सिंह, मिडिल क्लास के बच्चों में आराध्या गुप्ता, सौम्या सिंह एवं प्रतिज्ञा शाक्य कुमारी और हायर सेकेंडरी के बच्चों में परिधि श्रीवास, मनीषा एवं अंजलि ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किए।

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

नारी सशक्तीकरण एवं बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए हो रहे प्राणवान प्रयास

150 कन्याओं ने स्वयं को सशक्त बनाने का संकल्प लिया

गायत्री मंत्र के जप और ध्यान से जीवन में आते हैं सकारात्मक परिवर्तन

जयपुर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी में बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से एक दिवसीय कन्या कौशल शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में राजस्थान की 150 से अधिक बेटियों ने भाग लेकर स्वयं को सशक्त बनाने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम संयोजिका श्रीमती गायत्री कचोलिया ने बताया कि यह शिविर दो सत्रों में आयोजित हुआ। मुख्य वक्ता पूर्णिमा पंवार थीं, जिन्होंने बेटियों से कहा कि उनकी आँखों में जोश और सही-गलत की पहचान होनी चाहिए। बेटियाँ शिक्षित बनें। आप परिवार के लिए समस्या नहीं, बल्कि समाधान का स्रोत बनें।

पूर्णिमा ने बेटियों को जन्मदिन पर पेड़ लगाने, भारतीय परिधान अपनाने और घर के कामों में सहयोग करने के लिए भी प्रोत्साहित किया। निकिता पाटीदार ने कहा कि गायत्री मंत्र का जप और नित्य सूर्य का

जयपुर के शिविर में कन्याओं की उत्साहवर्धक भागीदारी

ध्यान करने से जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आता है। दीक्षा जामवाल ने कहा कि नारी प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है, उसमें सभी गुण स्वाभाविक रूप से मौजूद हैं, जिन्हें विकसित करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का संचालन दीक्षा जामवाल ने किया।

21 दिवसीय शिविर, 90 कन्याओं की भागीदारी

बूंदी। राजस्थान : बूंदी में 21 दिवसीय निःशुल्क कन्या कौशल शिविर आयोजित हुआ, लगभग 90 कन्याओं ने इसमें भाग लिया। श्री विष्णु दत्त दाधीच ने बालिकाओं को प्रज्ञा योग प्राणायाम के संबंध में जानकारी दी। श्रीमती निर्मला कसेरा ने महाभारत की माता कुंती का संस्मरण सुनाते हुए नन्हीं बालिकाओं को तपोमय जीवन जीने का पाठ पढ़ाया।

कृषि विज्ञान केंद्र कोटा की डॉ. श्रीमती गुंजन शर्मा ने कन्याओं को स्वावलम्बन की दिशा में आगे बढ़ाते हुए पान, गुलाब, नींबू आदि के शरबत बनाने की विधि सिखाई व श्रीमती प्रेम गुप्ता ने अमृतधारा बनाना सिखाया।

जिला स्तरीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

बालाघाट। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बालाघाट में कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन प्रशिक्षक, प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न हुई। इसमें 11 तहसीलों के प्रशिक्षक एवं सभी तहसीलों के तहसील समन्वयक उपस्थित रहे। सभी समन्वयकों ने अपनी-अपनी तहसीलों में युवा पीढ़ी के भावनात्मक विकास हेतु आयोजनों की जरूरत पर चिंतन किया।

शिविर के आयोजन क्यों और कैसे, आदि विषयों पर सारगर्भित उद्बोधन के साथ ही गुरुदेव द्वारा लिखित असंख्य पुस्तकों में से हम वर्तमान और भावी पीढ़ी को क्या दे सकते है, इस पर विशेष चिंतन हुआ।

उपजोन छिंदवाड़ा कार्यवाहक श्री किशोर किनकर ने इन शिविरों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कुशल प्रशिक्षक श्री नरेंद्र हिंगवे ने कहा कि सोशल

बालाघाट में चल रहा प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

मीडिया के दुष्प्रभाव से किशोरवय बालिकाओं के मानसिक विकास में भटकाव की स्थिति पैदा होती है। उन्होंने इस संदर्भ में प्रेरक और सटीक मार्गदर्शन दिया।

जिला बालाघाट में कन्या किशोर कौशल अभिवर्धन अभियान की प्रभारी सुश्री गायत्री पटले के सुंदर संचालन, श्री महेश खजांची जी के कुशल मार्गदर्शन, जिला समन्वयक पुष्पेश्वर पिछोड़े की प्रमुख उपस्थिति और डॉ. चारूदत्त जोशी के सफल व्यवस्थापन में यह शिविर संपन्न हुआ। इस आयोजन में गायत्री शक्तिपीठ सौंसर के युवा प्रबंध ट्रस्टी शिवाजी ठाकरे भी उपस्थित रहे।

युवा चेतना शिविर

मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेज के 800 विद्यार्थियों ने भाग लिया

कालाहांडी। ओडिशा

परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत उत्कल प्रांत में युवा जागृति अभियान तेजी से गतिशील हो रहा है। स्कूल और कॉलेज में युवा चेतना शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इस अभियान के अंतर्गत प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ ओडिशा और युवा प्रकोष्ठ कालाहांडी द्वारा 25 और 26 अप्रैल 2025 को मेडिकल कॉलेज तथा भवानीपटना इंजीनियरिंग कॉलेज में युवा चेतना शिविरों का आयोजन हुआ। 'मानवीय उत्कृष्टता, व्यक्तित्व विकास और सफलता के सूत्र' विषय पर आयोजित इस शिविर के मुख्य वक्ता युवा प्रकोष्ठ शान्तिकुञ्ज के प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह और दिया मुंबई के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता डॉ. वरुण मानेक थे।

इस कार्यक्रम में इंजीनियरिंग कॉलेज में 300 छात्र उपस्थित थे। मेडिकल

शिविर को संबोधित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह

कॉलेज और ओडिशा कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय के 500 छात्रों ने भाग लिया। सभी विद्यार्थियों को कभी हार न मानो, सफलता के तीन सूत्र, सफलता के सात सिद्धांत, व्यक्तित्व विकास, विद्यार्थियों में नशे के दुष्प्रभाव जैसे विषयों से संबंधित साहित्य भेंट किया गया। तीनों महाविद्यालयों के प्राध्यापकों ने सभी को प्रोत्साहित किया तथा प्रत्येक वर्ष अपने महाविद्यालयों में इस कार्यक्रम का आयोजन करने का अनुरोध किया।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए कालाहांडी जिला संयोजक तपन कुमार साहू, पवित्र मोहन, युवा समन्वयक, युवा संयोजक कमल नायक एवं सभी वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने भरपूर सहयोग किया।

शक्तिपीठ में पाँच दिवसीय साधना शिविरों का शुभारंभ

हर माह आयोजित होंगे साधना शिविर

पडखुरी, सीधी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ पडखुरी में दिनांक 21 मई से 25 मई 2025 पाँच दिवसीय साधना सत्र सम्पन्न हुआ। इसमें इंदौर, शाजापुर, सीधी, नागोद, शहडोल एवं रीवा जिलों के 20 परिजनों ने भाग लिया। यह साधना सत्र शान्तिकुञ्ज द्वारा मुनस्यारी, नई टिहरी आदि स्थानों पर चलाए जा रहे साधना सत्रों की तरह ही आयोजित हुआ, जिसमें सज्जनों को संगठित करने तथा साधकों को विचार क्रान्ति के अग्रदूत के रूप में विकसित करने के लिए प्रशिक्षण भी दिया गया।

शिविर संचालन में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आर. सी. गायकवाड़ एवं श्री दिनेश देशमुख की गरिमामय उपस्थिति रही। श्री गायकवाड़ जी ने 'युग निर्माण सत्संकल्प' एवं 'अपने अंग अवयवों से' की व्याख्या करते हुए उन्हें अपने व्यक्तित्व विकास का आधार बनाने की प्रेरणा दी। उप जोन समन्वयक एवं शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री प्रभाकांत तिवारी साधना और संगठन संबंधी मार्गदर्शन दिया। समस्त शिविरार्थियों को यज्ञीय कर्मकाण्ड का प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया। शिविर के सफल संचालन में श्री दिनेश बैस, श्री द्वारका पटेल एवं लाला का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

ऑनलाइन पंजीयन की सुविधा उपलब्ध है

शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री प्रभाकांत तिवारी जी ने बताया कि पडखुरी में अब प्रत्येक माह की 21 से 25 तक की तिथियों में नियमित साधना सत्र आयोजित किए जायेंगे। इनमें भाग लेने के इच्छुक साधक/परिजन शान्तिकुञ्ज की वेबसाइट awgp.org\shivir पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

प्रथम शिविर में भाग लेने वाले साधकगण

बाल संस्कारशाला एवं युवा मण्डल गठन के संकल्प उभरे

छुरिया, राजनांदगाँव । छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार ट्रस्ट छुरिया के तत्त्वावधान में ग्राम पंचायत जयसिंग टोला के आश्रित ग्राम रामतराई स्थित हाईस्कूल में चार दिवसीय जिला स्तरीय युवा व्यक्तित्व निर्माण आवासीय शिविर का आयोजन हुआ। इसमें 14 गाँवों से 107 युवाओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ थाना प्रभारी गैंदाटोला श्री

अरुण कुमार, सरपंच श्री दुलीचंद साहू, उपसरपंच श्री शत्रोहन यादव, जिला संयोजक जय प्रकाश सिन्हा सहित अन्य गणमान्यजनों द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। थाना प्रभारी ने डिजिटल सुरक्षा पर विशेष मार्गदर्शन दिया, वहीं सीईओ श्री होरिलाल साहू ने पर्यावरण संरक्षण संबंधी प्रेरणाएँ दीं। विषय विशेषज्ञों द्वारा व्यक्तित्व विकास, कैरियर निर्माण, यज्ञ विज्ञान, नशा मुक्ति, वृक्षारोपण आदि विषयों पर बड़ी उपयोगी जानकारियाँ दी गईं।

इस शिविर में 5 बाल संस्कार शालाएँ आरंभ करने और 7 युवा मंडल गठित करने के संकल्प उभरे। युवाओं ने गुरुदेव के विचारों से जुड़े रहने का संकल्प लिया। पंच कुंडीय यज्ञ भी संपन्न हुआ, जिसमें 3 बहिनों का पुंसवन संस्कार हुआ। यज्ञ में देवदक्षिणा स्वरूप 13 युवाओं ने नशा त्यागने का संकल्प लिया।

इस शिविर के आयोजन में तुलेश्वर सेन, शीला सोनी, अहिल्या साहू व डॉ. तपेश्वर सिंह समेत दर्जनों स्वयंसेवकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए बहिनों की सक्रियता का अभिनंदन

गर्मी की छुट्टियों में पूरे राजस्थान में आयोजित हुईं दीर्घ कालीन बाल संस्कार शालाएँ और व्यक्तित्व परिष्कार शिविर

अपने मिशन का एक बहुप्रचलित गीत है-देवियाँ देश की जाग जायें अगर, युग स्वयं ही बदलता चला जायेगा। इस भाव और संकल्प को साकार कर रही एक दिव्य चेतना इन दिनों पूरे राजस्थान में प्रस्फुटित हुई है। परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के अवसर पर विशेष उत्साह और संकल्प के साथ पूरे राजस्थान की मातृशक्ति ने बाल निर्माण के लिए अत्यंत आदर्श, अनुकरणीय सक्रियता अपनाई है।

इस वर्ष ग्रीष्मकाल में राजस्थान के अनेक शहरों में बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए तरह-तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। श्रीमती उषा शर्मा (बूंदी) ने 100 एकदिवसीय कन्या कौशल शिविरों का आयोजन किया। श्रीमती प्रतिभा गुप्ता (धौलपुर) के नेतृत्व में 21 दिवसीय कन्या कौशल शिविर सम्पन्न हुआ। श्रीमती उर्मिला खंडेलवाल (सिरोही) ने वाल्मीकि बस्ती में 21 दिवसीय शिविर आयोजित किया।

श्रीमती उमेश शर्मा, सुश्री सरिता शर्मा आदि के सहयोग से श्रीमती दयावती ने सादुलपुर (चुरु) में, श्रीमती शारदा सैनी ने राजसमंद में, श्रीमती स्नेहलता ने कांकरोली (राजसमंद) में, श्रीमती अंजु माहेश्वरी ने दौसा में, श्रीमती मंजुला खरे ने पिलानी (झुंझुनू) में, श्रीमती अर्चना जांगिड ने जोधपुर में, श्रीमती बसंती ने जोधपुर में, श्रीमती प्रतिभा पाटोदिया ने भीलवाड़ा में, श्रीमती अंजु मीणा ने बूंदी में 14 से लेकर 40 दिवसीय बाल संस्कार शाला शिविरों का आयोजन किया।

श्रीमती रेखा पटवा (कोटा) पिछले 4 वर्षों से बच्चों को सद्गुणी-संस्कारवान बनाने हेतु ऑनलाइन साधना शिविर एवं प्रेरणा-प्रशिक्षणपरक कार्यक्रम चला रही हैं। श्रीमती ममता गुप्ता (अलवर) ने ऑनलाइन प्रांत स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न कराया। आबूरोड में श्रीमती कृष्णा शर्मा ने, नाथद्वारा में श्रीमती कमल सनाढ्य ने विद्यालयों और छात्रावासों में व्यक्तित्व परिष्कारपरक कार्यक्रम आयोजित किए।

संगीत एक शक्ति है, जो ऐसा इन्द्रिय सुख देती है, जिसमें कोई बुराई नहीं होती। -जॉनसन

जन्मशताब्दी की विशिष्ट योजना और प्रेरणाओं से समाज में बढ़ती युग निर्माणी आस्था

जिले में ज्योति कलश रथ यात्रा का शुभारंभ हुआ

बडवानी (मध्य प्रदेश)

बडवानी जिले में 16 मई, 2025 को 24 कन्याओं द्वारा कलश पूजन एवं शंखनाद के साथ ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल जिला प्रभारी ममता तोमर एवं गायत्री दसौंधी ने कलश पूजन संपन्न कराया एवं सभी को जन्म शताब्दी वर्ष में महिला सशक्तीकरण पर कार्य करने की प्रेरणा दी।

ओंकारेश्वर उपजोन के सहायक समन्वयक डॉ.सोहन लाल गुर्जर ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को जन्मशताब्दी वर्ष के दायित्वों का स्मरण कराते हुए अपनी अधिक से अधिक भागदारी सुनिश्चित करने का आह्वान किया। सप्त आन्दोलनों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमें व्यसन मुक्ति आंदोलन की दिशा में विशेष प्रयास करने होंगे। पंडित मेवालाल पाटीदार ने सभी को उनके कर्त्तव्यों एवं दायित्वों के विषय में मार्गदर्शन दिया।

इस अवसर पर उपजोन प्रभारी पन्नालाल बिरला, खरगोन जिले के समन्वयक जोगिलाल मुजाल्दे, जिला समन्वयक महेंद्र भावसार, कन्हालाल ठेकेदार, जीवा दादा, रेखा पुरोहित, तुलसी यादव, प्रकाश नरगावे इत्यादि परिजनों की विशेष उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

श्री महेन्द्र भावसार ने बताया कि बड़वानी जिले में यह कलश यात्रा आगामी 50 दिनों तक चलेगी।

देवालयों के आदर्श विकास के संकल्प उभरे

शाजापुर। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ शाजापुर में लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती के अवसर पर दिनांक 25 मई को श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस समारोह में कई वरिष्ठ जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए। गणमान्य वक्ताओं ने अहिल्याबाई के न्यायप्रिय, धर्मपरायण व समाजसेवी स्वरूप की सराहना करते हुए आज के समाज में उनके आदर्शों की प्रासंगिकता पर बल दिया। विशेष रूप से मंदिरों के जीर्णोद्धार कार्यों में उनकी भूमिका को स्मरण करते हुए जिले के देवालयों को आदर्श रूप देने का संकल्प लिया गया।

महिला मंडल प्रमुख श्रीमती सीमा शर्मा ने स्वागत भाषण दिया, जबकि मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री प्रदीप कुमार वैद्य ने आभार प्रकट किया।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई के जीवन पर आधारित एक अत्यंत प्रेरणाप्रद चित्र प्रदर्शनी लगाई गई थी, जिसने सभी को बहुत प्रभावित किया।

गायत्री शक्तिपीठ पर संस्कार शिविर संपन्न

जबलपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार ट्रस्ट, जबलपुर द्वारा राष्ट्र की भावी पीढ़ी में संस्कारों के बीजारोपण हेतु क्षेत्रवार नियमित बाल संस्कार शालाएँ चलाई जा रही हैं। संस्कार शाला के विद्यार्थियों के लिए एक विशेष संस्कार शिविर गायत्री शक्तिपीठ, मनमोहन नगर पर आयोजित किया गया। इसमें विशेषज्ञों के द्वारा विद्यार्थियों को दिनचर्या, समय प्रबंधन, शिष्टाचार, संस्कार, व्यक्तित्व परिष्कार जैसे विषयों के साथ ही जल प्रबंधन, नशा मुक्ति, कौशल विकास, मोबाइल के सदुपयोग आदि पर भी

समुचित मार्गदर्शन दिया गया।

शिविर के समापन सत्र में उपजोन प्रभारी श्री नरेश तिवारी जी ने बच्चों को नियमित गायत्री उपासना से जीवन में बड़े लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा दी। श्री प्रमोद राय, श्री अरविंद श्रीवास्तव, श्री प्रकाश सेन द्वारा सभी शिवरार्थियों को उपहार स्वरूप सत्साहित्य दिया गया। शिविर का संयोजन स्नेहलता सांवरे, मोहन चक्रवैश्य, दीपेश कोष्टा सुनील मालवी द्वारा किया गया।

युग निर्माण सत्संकल्प का प्रचार-विस्तार

नैमिषारण्य, सीतापुर। उत्तर प्रदेश

श्रीराम साधना आरण्यक, नैमिषारण्य ने अपने क्षेत्र में युग निर्माण सत्संकल्प प्रचार-प्रसार अभियान को शानदार गति दी है। इस अभियान की सफलता में हरदोई की बेनीगंज शाखा के प्रज्ञा मंडल से जुड़े प्राणवान कार्यकर्त्ताओं का विशेष योगदान है।

- फ्लैक्स, बैनर और स्टिकर्स तैयार कर नगर, आरण्यक क्षेत्र एवं निकटवर्ती गाँवों में वितरित किए जा रहे हैं।
- बेनीगंज ब्लॉक के रेलवे स्टेशन परिसर में युग निर्माण सत्संकल्प का विशाल बैनर लगाया गया, जो राहगीरों को सहज ही आकर्षित कर रहा है।
- विद्यालयों में कन्या कौशल कार्यशालाओं में बच्चों को युग निर्माण सत्संकल्प का पाठ करवाया जा रहा और उसके स्टिकर्स दिए जा रहे हैं।
- सार्वजनिक स्थलों पर यु.नि. सत्संकल्प के स्टिकर्स/बैनर लगाए जा रहे हैं।

विद्यालय में सत्संकल्प पाठ का शुभारंभ

लखीसराय। बिहार : लखीसराय में गायत्री परिवार के प्रखण्ड युवा समन्वयक श्री संजीत कुमार ने विगत नवरात्र से शान्तिकुञ्ज द्वारा किए गए राष्ट्रीय आह्वान का स्वागत करते हुए अपने निजी विद्यालय ब्राइट वे पब्लिक स्कूल में बच्चों से प्रतिदिन युग निर्माण सत्संकल्प दोहरवाने की प्रशंसनीय पहल की है। उल्लेखनीय है कि यह विद्यालय अपने मिशन की विचारधारा के अनुरूप बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील है। विद्यार्थी सामूहिक मंत्रोच्चार, गायत्री मंत्र लेखन करते हैं, साथ ही योग, ध्यान आदि साधनाएँ भी कराई जाती हैं।

60 यजमान दंपतियों ने गुरु दीक्षा ली

24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ

हटा, दमोह (मध्य प्रदेश)

देवरा जामशा में 6 से 9 मई तक 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन हुआ। यज्ञ से पूर्व पूरे गाँव को सद्वाक्य लेखन से सुसज्जित किया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति में 60 यजमान दम्पत्तियों ने गुरुदीक्षा प्राप्त की।

दीपयज्ञ में आरती उतारती देवकन्याएँ

यज्ञ का शुभारम्भ 240 कलशों की यात्रा से हुआ। कलश यात्रा के स्वागत में मार्ग में पड़ने वाले सभी घरों में रंगोली सजाई गई, पुष्प वर्षा की गई एवं आरती उतारी गई।

यज्ञ संचालन करते हुए शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री प्रमोद बारचे ने बताया कि वर्तमान समय में करोड़ों लोग नियमित गायत्री मंत्र का जप कर रहे हैं। पूरी दुनिया में गायत्री परिवार के लगभग 50,000 छोटे-बड़े केन्द्र हैं, सभी केन्द्रों में नित्य गायत्री मंत्र का जप एवं यज्ञ किया जाता है। दुनिया में बदलती परिस्थितियों में इसका प्रभाव देखा जा सकता है। भविष्य में भारत महाशक्ति बनने जा रहा है। आज पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है, यह सब गायत्री साधना का ही परिणाम है।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि साधना से ही शक्ति जागृत होती है। आप सब जो भी साधना करते हों, उसमें 15 मिनट गायत्री जप को भी जोड़ दें तथा इसके साथ-साथ आद्यात्मिक साहित्य का स्वाध्याय भी अवश्य करें।

यज्ञ के समापन पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों द्वारा समयदान एवं अंशदान करने वाले समस्त परिजनों, ग्रामवासियों एवं क्षेत्रवासियों का सम्मान किया गया। यज्ञ संयोजक श्री नारायण सिंह पटेल ने 24 ग्रामों में प्रयाज कार्यक्रम को संचालित करने वाले श्री दिनेश दुबे, श्री गिरधर पटेरिया एवं श्री हरिनारायण चौकरया सहित सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

अपने गाँव को आदर्श गाँव बनाने का उत्साह

बेरछा जागीर, उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार शाखा बेरछा जागीर, तहसील नागदा द्वारा हर वर्ष 7 से 11 मई 2025 तक की तिथियों में वार्षिकोत्सव मनाया जाता है। इस वर्ष 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा के साथ बड़ी धूमधाम से वार्षिकोत्सव मनाया गया। आयोजन में क्षेत्रीय विधायक डॉ. तेज बहादुर सिंह चौहान विशेष रूप से उपस्थित रहे।

गणमान्यों द्वारा नित्य सत्संकल्प पाठ के लिए दी जा रही प्रेरणा

चार दिवसीय समारोह का शुभारंभ दिव्य और भव्य कलश यात्रा से हुआ। ग्रामीणों की सुविधा के अनुसार रात्रि 8 से 10 बजे तक प्रज्ञा पुराण कथा होती थी। 28 परिजनों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। नामकरण, विद्यारंभ, विवाह आदि संस्कार भी हुए।

माननीय विधायक श्री को युग निर्माण सत्संकल्प भेंट कर सम्मानित किया गया। उनसे ग्राम बेरछा को शासकीय आदर्श ग्राम योजना में शामिल कराने का अनुरोध भी किया गया। आयोजन ने गाँव में सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना को नई ऊर्जा दी है। बेरछा में गायत्री परिवार द्वारा जन सहयोग से पूर्व में स्थायी प्रवचन पांडाल का निर्माण कराया गया है। इस कार्यक्रम में भोजनालय शेड निर्माण हेतु सहयोग के संकल्प उभरे।

70 युवाओं ने गुरुदीक्षा ली, 50 ने मांसाहार छोड़ा

तमनार, रायपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ तमनार द्वारा पाँच दिवसीय आवासीय व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर का आयोजन किया गया। इसके समापन समारोह में सभी 145 शिविरार्थियों ने भाग लिया, जिसमें 70 युवाओं ने गुरुदीक्षा ली, 50 ने मांसाहार का त्याग किया एवं 13 से अधिक युवाओं ने बाल संस्कार शाला प्रारंभ करने का संकल्प लिया।

समापन कार्यक्रम 25 मई को गायत्री यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। इसके मुख्य अतिथि, उपजोन समन्वयक श्री दानेश्वर शर्मा कोरबा ने युवाओं से राष्ट्रनिर्माण के लिए स्वयं को तैयार करने का आह्वान किया। शिविर के समापन पर शिविरार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए। सभी को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

पाँच दिवसीय शिविर में व्यक्तित्व विकास, जीवन लक्ष्य निर्धारण, तनाव प्रबंधन, ब्रह्मचर्य साधना, योग-प्राणायाम, संस्कार विज्ञान जैसे विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया। इसका संचालन रायपुर से श्री चम्पेश्वर साहू के नेतृत्व में आई टोली ने किया। शक्तिपीठ के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री अश्विनी कुमार पटनायक ने शिविर की सफलता में सहयोग के लिए सभी सहयोगियों एवं परिजनों का आभार व्यक्त किया।

सारवां प्रखण्ड में गाँव-गाँव जनसंपर्क अभियान चला

देवघर (सारवां)। बिहार

सारवां प्रखंड में गाँव-गाँव, नगर-नगर ज्योति कलश रथ यात्रा का भव्य स्वागत हुआ। आध्यात्मिक जागरण, नैतिक उत्थान और सांस्कृतिक क्रांति का संदेश लेकर गाँव-गाँव पहुँच रही इस यात्रा के साथ डकाय, जोगिया टिकुर, बाराकोला, गोंदलबारी, भुरकुंडा, देवपहरी व धावाडंगाल गाँवों में व्यापक स्तर पर जनसंपर्क अभियान चलाया गया। इस क्रम में गुरुदेव द्वारा रचित साहित्य एवं अखंड ज्योति पत्रिकाओं का निःशुल्क वितरण किया गया। कई स्थानों पर दीपयज्ञ हुए। ज्योति कलश यात्रा की सफलता में रतन प्रसाद राय एवं डॉ. अतानु कुमार चक्रवर्ती की विशेष भूमिका रही।

संगीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है, जिसे संगीत से प्यार नहीं, उससे शैतान भी डरता है। -शेखसादी

विश्व तंबाकू निषेध दिवस : पूरे देश में भव्य जनजागरण रैलियों के आयोजन हुए

अखिल विश्व गायत्री परिवार अपने 'नशामुक्त भारत अभियान' के अंतर्गत पूरे देश में वर्षभर तरह-तरह के कार्यक्रमों का आयोजन करता है। विश्व तंबाकू निषेध दिवस (31 मई 2025) पर शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के निर्देशन में प्रायः सभी राज्यों के अनेक नगर-गाँवों में जनजागरूकता परक कार्यक्रम आयोजित किए। युवाओं, बाल संस्कार शालाओं, प्रज्ञा मंडलों, महिला मंडलों व स्वयंसेवकों ने बड़ी तन्मयता के साथ नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणाएँ दीं। प्रस्तुत है प्रज्ञा अभियान को प्राप्त समाचारों का विवरण सार-संक्षेप में।

सफाई कर्मियों के बीच कार्यशाला

ठाणे, मुंबई (महाराष्ट्र)

ठाणे में सफाई कर्मचारियों के बीच नशामुक्ति जनजागरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. वरुण माणेक ने पावर पॉइंट के माध्यम से अपनी बात कही। कार्यशाला के अंत में सभी से व्यसन मुक्ति के संकल्प कराए गए एवं व्यसन मुक्ति साहित्य वितरित किया गया।

चित्रकला प्रतियोगिता : तंबाकू मुक्त भारत

विले पार्ले, मुंबई (महाराष्ट्र)

विले पार्ले शाखा ने बच्चों के बीच ड्रॉइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें बच्चों ने 'तंबाकू मुक्त भविष्य' की कल्पना को रेखांकित किया गया। युवाओं के साथ मिलकर सड़कों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन और भीड़ वाले क्षेत्रों में पोस्टर, बैनर व हस्ताक्षर अभियान चलाया। नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से समाज को यह संदेश दिया गया कि नशा न केवल स्वास्थ्य, बल्कि परिवार और समाज की नींव को भी कमजोर करता है।

सुन्दरबनी (जम्मू-कश्मीर)

इस कार्यक्रम में सभी सक्रिय कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों एवं बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और नशे के खिलाफ एकजुट होकर आवाज उठाई। कार्यकर्त्ताओं ने पूरे रास्ते में व्यसन मुक्ति विषय पर आधारित साहित्य लोगों को भेंट किया। सभी को नशे के दुष्परिणामों से होने वाली हानियों के बारे में विस्तार से बताया गया।

तीन दिवसीय जनसंपर्क अभियान चलाया

बरखेड़ा व कोलार, भोपाल (मध्य प्रदेश)

गायत्री प्रज्ञापीठ बरखेड़ा ने विश्व तंबाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में कोलार क्षेत्र में तीन दिवसीय व्यापक जनसंपर्क किया। यहां स्थानीय युवाओं द्वारा नुक्कड़ नाटक, प्रेरणाप्रद वीडियो प्रदर्शन व रैली का आयोजन किया गया। पीपीई किट पहनकर बच्चों ने **'तंबाकू छोड़ो-जीवन जोड़ो'** जैसे नारों के साथ जनता को जागरूक किया।

नशामुक्ति के संकल्प दिलाए

नरसिंहपुर (मध्य प्रदेश)

गायत्री परिवार नरसिंहपुर ने प्रातः सुभाष चौक पर आम जनों को संबोधित करते हुए नशा मुक्ति का संकल्प दिलवाया। करेली शाखा ने ग्राम नायकहेड़ा व बासदेही में भ्रमण कर लोगों को तंबाकू के दुष्परिणाम बताए और संकल्प पत्र भरवाए। श्री सतीश कौरव के मार्गदर्शन में यह अभियान सफलतापूर्वक संचालित हुआ।

अनेक आकर्षक कार्यक्रम हुए

बड़वानी (मध्य प्रदेश)

गायत्री परिवार बड़वानी ने सामाजिक न्याय एवं दिव्यांग सशक्तीकरण विभाग के सहयोग से विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर बृहद् स्तर पर नशामुक्ति अभियान रैली का आयोजन किया। भाजपा जिलाध्यक्ष श्री अजय यादव एवं एडीएम श्री के.के. मालवीय ने रैली को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इससे पूर्व न्यायाधीश सुश्री राजश्री भार्गव ने व्यसन से बचने सृजन में लगने की प्रेरणा दी, तत्पश्चात् नशामुक्ति की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में ग्रामीण क्षेत्र से बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। मंच का संचालन गायत्री परिवार के संजय सावनेर एवं ममता तोमर ने किया। युवा प्रकोष्ठ के जिला समन्वयक लखन विश्वकर्मा ने नशे से बचने के उपाय बताए। गायत्री शक्तिपीठ में नशा मुक्ति प्रदर्शनी सेल्फी पॉइंट बनाए गए। धार से आई नुक्कड़ नाटक मंडली द्वारा विशेष प्रस्तुतियाँ दी गईं।

शुजालपुर, शाजापुर (मध्य प्रदेश)

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर शुजालपुर मंडी में विशाल नशा मुक्ति जनजागरण रैली आयोजित हुई। गायत्री शक्तिपीठ शुजालपुर सहित आसपास की तहसीलों के कार्यकर्त्ता इस रैली में शामिल हुए। सबने मिलकर नशामुक्त भारत अभियान को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया।

सतत अभियान, शानदार सफलता

देवास (मध्य प्रदेश)

देवास में 31 मई को विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाते हुए बाल संस्कार शाला के बच्चों और वरिष्ठ परिजनों ने मोहल्लों में रैली निकाली। उनके उत्साहभरे गीत-नारों और बच्चों के हाथों में नशामुक्ति के स्लोगन की तख्तियों ने आम जनों को गहराई से प्रभावित किया। गजरा गियर्स चौराहे पर मानव शृंखला बनाकर नशे के विरुद्ध बड़ा संदेश दिया गया।

रैली के उपरांत गायत्री शक्तिपीठ सभागार में सामूहिक शपथ और नशे के दुष्परिणामों पर संवाद हुआ। युवा प्रकोष्ठ जिला समन्वयक श्री प्रमोद निहाले ने बताया कि उनकी शाखा द्वारा अब तक 185 से अधिक नशामुक्ति कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुए हैं।

30 गाँवों में दिया नशामुक्ति संदेश

पूरनपुर, पीलीभीत (उत्तर प्रदेश)

पूरनपुर शाखा द्वारा 31 मई को भव्य बाइक रैली निकाली गई। शक्तिपीठ से चीनी मिल के महाप्रबंधक ने हरी झंडी दिखाकर इसे रवाना किया। रैली ने लगभग 30 गाँवों में नशामुक्ति का संदेश फैलाया। बाइक रैली का कई स्थानों पर पुष्पवर्षा व जलपान से स्वागत हुआ।

प्रदर्शनी और हस्ताक्षर अभियान

टाटानगर/खूंटी (झारखण्ड)

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर गायत्री परिवार के 'नशा मुक्त भारत अभियान' के अंतर्गत टाटानगर में प्रभावशाली जनजागरण कार्यक्रम आयोजित किए गए। टाटानगर में नवयुग दल द्वारा सुबह एग्रीको ट्रांसपोर्ट मैदान में चित्र प्रदर्शनी लगाई गई एवं हस्ताक्षर अभियान चलाया गया तथा सायंकाल में विशाल जनजागरण रैली निकाली गई।

खूँटी में गायत्री परिवार, एकल अभियान और संकल्प इंस्टीट्यूट के छात्रों ने नगर में जागरुकता रैली निकाली। वक्ताओं ने नशे की विभीषिका से जन-जन को अवगत कराया। सभी ने 'नशा मुक्त भारत' अभियान के प्रति निष्ठावान रहने का संकल्प दोहराया और समाज में परिवर्तन लाने का संकल्प लिया।

बड़वानी

बरखेड़ा, भोपाल

गुरुग्राम

जहानाबाद

शुजालपुर

सुंदरबनी

टाटानगर

देवास

भिलाई

विले पार्ले

हरदा (मध्य प्रदेश)

विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ हरदा द्वारा नगर में व्यसन मुक्ति रैली का आयोजन किया गया। इस रैली के माध्यम से तंबाकू एवं अन्य नशों के दुष्प्रभावों को लेकर जन जागरूकता का संदेश दिया गया और नशा मुक्ति का संकल्प दिलाया गया।

रीवा (मध्य प्रदेश)

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर अखिल विश्व गायत्री परिवार रीवा द्वारा जिला समन्वयक श्री रविंद्र सिंह के मार्गदर्शन में जनजागरूकता रैली का आयोजन किया गया। यह रैली गायत्री शक्तिपीठ रीवा से प्रारंभ होकर शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए पुनः शक्तिपीठ पर आकर समाप्त हुई। संयोजक श्री राजेश शर्मा ने नशे के दुष्परिणामों और समाधान पर जानकारी दी। रैली में वरिष्ठ परिजनों व ट्रस्टियों का सहयोग रहा। कॉलेज के छात्रों और सफाई कर्मियों को नशामुक्ति की शपथ दिलाई गई, जिससे समाज में सकारात्मक संदेश पहुँचा।

युवा जागृति अभियान

जतारा, टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश)

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर गायत्री परिवार की युवा इकाई द्वारा किशोरों के बीच व्यसन मुक्ति गोष्ठी आयोजित की गई। एलआईसी कार्यालय के पास हुए कार्यक्रम में युवाओं को नशे से दूर रहने की शपथ दिलाई गई व संकल्प पत्र भरवाए गए। श्री मदन समेले ने किशोरावस्था में ही बच्चों के नशे के शिकार हो जाने पर गहरी चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि इसकी रोकथाम हेतु संवाद, मार्गदर्शन और समर्थन जरूरी है। उन्होंने बताया कि सर्वश्री मनोज त्रिपाठी, धर्मेंद्र चौरसिया, जे.पी. प्रजापति, हरिनारायण खरे आदि प्राणवान कार्यकर्त्ता सतत संवाद के माध्यम से बच्चों को व्यसन मुक्ति की ओर प्रेरित कर रहे हैं।

विद्यालयों में दिया संदेश

गुरुग्राम (हरियाणा)

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर गुरुग्राम में विभिन्न विद्यालयों में नशा मुक्ति कार्यक्रम आयोजित किए गए। आत्मीय परिजनों, शिक्षकों एवं प्राचार्या महोदया के सहयोग से आयोजित इन आयोजनों में कार्टरपुरी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के 12वीं के विद्यार्थियों के लिए विशेष सत्र लिया गया, जिसमें उन्होंने विकसित एवं व्यसन मुक्त भारत के निर्माण में सक्रिय योगदान देने का संकल्प लिया।

गायत्री मंत्र का जप नशे की आदत से बचाता है

कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

गायत्री शक्तिपीठ कुरुक्षेत्र द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर भव्य नशा मुक्ति रैली निकाली गई। इस रैली ने परसराम कॉलोनी, नरकातारी रोड, दर्रा खेड़ा रोड, बगथला रोड, नाभिकमल मंदिर रोड एवं न्यू लक्ष्मण कॉलोनी का मार्ग तय करते हुए सैकड़ों लोगों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराया, पर्चे बाँटे गए, जागरूकता संदेश दिया गया और सभी लोगों को बताया गया कि गायत्री मन्त्र के जप और ध्यान से नशा मुक्ति में बहुत सहायता मिलती है।

जहानाबाद (बिहार)

31 मई को प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद द्वारा जनजागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली अरवल मोड़ से कारगिल चौक तक निकाली गई, जिसमें सैकड़ों गायत्री परिजनों, युवक-युवतियों एवं महिला मंडल की बहिनों की सहभागिता रही। नशे के दुष्प्रभावों पर जागरूकता फैलाई गई और 'नशा नाश का मूल' जैसे नारों से शहर गूँज उठा। वक्ताओं ने कहा कि गायत्री उपासना और संकल्प शक्ति से व्यसन मुक्ति संभव है। इस आयोजन में कई वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

जिले में 20 केन्द्रों पर जागरूकता अभियान

देवघर (झारखण्ड)

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर गायत्री परिवार देवघर द्वारा जिले के 20 चयनित केंद्रों से नशा मुक्त भारत अभियान का व्यापक जनजागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। जिला समन्वयक श्री वरुण कुमार के निर्देशन में और मुख्य ट्रस्टी देवनारायण रजक के सामंजस्य से अभियान का शुभारंभ हुआ। पेम्फ्लेट, बैनर, गीत और नारों के माध्यम से आमजन, ठेला-टेंपो चालकों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराया गया। प्राणायाम, सूर्य नमस्कार व गायत्री मंत्र जप को नशामुक्ति के उपाय के रूप में बताया गया। अभियान में कई सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं की सराहनीय भागीदारी रही।

भिलाई (छत्तीसगढ़)

गायत्री परिवार के 'नशा भारत छोड़ो' अभियान के अंतर्गत विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर उप जोन दुर्ग, भिलाई द्वारा रुवाबाँधा बस्ती, कॉलोनी मार्केट एवं आसपास के क्षेत्र में नशामुक्ति रैली का आयोजन किया गया। इसके माध्यम से हजारों लोगों को नशे के दुष्प्रभावों की जानकारी देते हुए नशा छोड़ने की प्रेरणा दी गई। इस रैली में नशा मुक्ति विषय पर आधारित साहित्य लोगों को भेंट किया गया। प्रांतीय संयोजक युवा प्रकोष्ठ, 'दिया' छत्तीसगढ़ के संयोजक डॉ. पी.एल. साव ने इस अवसर पर कहा कि नशा मुक्ति की राह पर चलने से ही हम एक स्वस्थ और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

व्यक्ति जैसा बनना चाहे, बहुत कुछ वैसा ही बन सकता है, यदि वह प्रतिज्ञा कर ले और उस पर आरूढ़ रहे। -बक्सटन

लातविया में देव संस्कृति का विस्तार

नवनियुक्त भारतीय राजदूत श्रीमती नम्रता कुमार जी से वार्ता

रीगा। लातविया

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के लातविया प्रवास में उनकी सर्वप्रथम भेंट लातविया में भारत की नवनियुक्त राजदूत माननीया श्रीमती नम्रता कुमार जी से हुई। इस अवसर पर उन्होंने माननीया नम्रता कुमार जी के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार में स्थापित विश्व के सबसे बड़े एवं एशिया के प्रथम बाल्टिक संस्कृति एवं अध्ययन केंद्र की जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि यह केंद्र भारत एवं बाल्टिक राष्ट्रों के मध्य सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं शैक्षिक सेतु के रूप में कार्य कर रहा है।

"भारत एवं बाल्टिक राष्ट्रों के मध्य सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं शैक्षिक सेतु के रूप में कार्य कर रहा है देव संस्कृति विश्वविद्यालय स्थित बाल्टिक संस्कृति एवं अध्ययन केंद्र।"
– आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रति कुलपति देसंविवि.

राजदूत महोदया को युग साहित्य भेंट करते आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

इस वार्ता में पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की उस युगद्रष्टा विचारधारा पर भी चर्चा हुई, जो वैश्विक शांति, सांस्कृतिक समरसता एवं राष्ट्रीय मूल्यों के पुनर्जागरण पर आधारित है। डॉ. पण्ड्या जी ने जन्मशताब्दी वर्ष 2026 की पृष्ठभूमि में युग निर्माण आंदोलन की वर्तमान योजनाओं एवं अंतरराष्ट्रीय प्रयासों की भी जानकारी दी।

माननीय राजदूत महोदया विश्व में शान्ति एवं समरसता और देव संस्कृति के विस्तार के लिए शान्तिकुञ्ज द्वारा किए जा रहे प्रयासों से बहुत प्रभावित हुईं। यह संवाद भारत-लातविया के मध्य सांस्कृतिक सहयोग को प्रगाढ़ करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास सिद्ध हुआ।

भारत और लातविया के बीच शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित सहयोग बढ़ाने पर विचार-विमर्श हुआ

शिक्षाविदों के संग चर्चा

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने रीगा स्थित भारतीय दूतावास में भारत की नवनियुक्त राजदूत आदरणीया श्रीमती नम्रता कुमार जी से शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर लातविया के प्रमुख विश्वविद्यालयों के प्रतिष्ठित शिक्षाविद प्रो. मार्सिस औज़िन्स (पूर्व रेक्टर, यूनिवर्सिटी ऑफ लातविया), प्रो. टिपान्स (प्रो-रेक्टर, रीगा टेक्निकल यूनिवर्सिटी) एवं प्रो. इनिसे कोकिना (वाइस रेक्टर, डौगावपिल्स यूनिवर्सिटी) भी उपस्थित रहे। बैठक में भारत और लातविया के मध्य शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित सहयोग को विस्तार देने के विविध पहलुओं पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

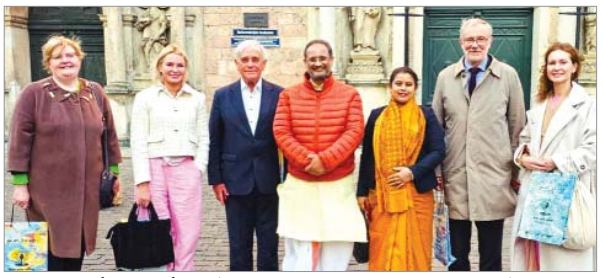

शिक्षाविदों की संगोष्ठी में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के साथ शामिल माननीय भारतीय राजदूत (पीली साड़ी में) एवं अन्य गणमान्य

आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी ने वर्तमान समय में परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के दृष्टिकोण 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद एवं युग निर्माण' की वैश्विक प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

अपनी महान संस्कृति के प्रति गौरवबोध कराता गायत्री यज्ञ

रीगा (लातविया) में भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना के संकल्प के साथ गायत्री यज्ञ का दिव्य आयोजन संपन्न हुआ। इसका संचालन स्वयं आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के मार्गदर्शन में हुआ। बड़ी संख्या में भारतीय मूल के परिवारों ने इस यज्ञ में सहभागिता की। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के प्रेरक संदेश और यज्ञ की दिव्य अनुभूतियों के साथ उन्हें अपनी महान संस्कृति पर गौरव बोध करने का अवसर प्राप्त हुआ।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने पूज्य गुरुदेव के विचारों को साझा करते हुए कहा कि गायत्री यज्ञ केवल एक कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि यह युग परिवर्तन की वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो व्यक्तित्व और समाज दोनों को उत्कृष्टता की दिशा में ले जाती है।

यह यज्ञ प्रवासी भारतीयों को सांस्कृतिक चेतना के उन्नयन के लिए एक सूत्र में पिरोने का प्रभावशाली प्रयास था। इस अवसर पर ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले भारत माता के अमर सपूतों को श्रद्धांजलि दी गई। यह यज्ञ यूरोप में जन्मशताब्दी वर्ष 2026 के पुनीत संकल्पों को गति देने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास था।

मापुटो (मोजाम्बिक) में बाल संस्कार व गायत्री यज्ञ

भारतीय संस्कृति से जुड़े 250 श्रद्धालुओं ने भाग लिया

अफ्रीकी देश मोजाम्बिक की राजधानी मापुटो के राधाकृष्ण मंदिर परिसर में 5 कुंडीय गायत्री यज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। लगभग 250 श्रद्धालुओं ने इस यज्ञ में भाग लिया और गायत्री मंत्र की आहुतियाँ अर्पित करते हुए स्वयं को अत्यंत आनंदित अनुभव किया। इस अवसर पर स्थानीय गायत्री परिजन श्रीमती आरतीबेन ने मापुटो में गायत्री परिवार द्वारा चलाई जा रही नियमित बाल संस्कार शाला सहित विविध गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बाल संस्कार शाला में बच्चों को भारत के वीर पुरुषों का इतिहास, सनातन संस्कृति के मूल्य और धार्मिक श्लोक सिखाए जाते हैं। यह शिक्षा उन्हें अपने देश, संस्कृति और धर्म पर गर्व करना सिखाती है।

यू.के. में ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ

युग परिवर्तन के लिए सामूहिक साधना पुरुषार्थ का आमंत्रण लेकर लोगों तक पहुँचेगी ज्योति कलश यात्रा

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गायत्री चेतना केन्द्र लेस्टर में ज्योति कलश का प्रथम पूजन करते हुए

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक, परम पूज्य गुरुदेव की युगांतरीय चेतना के ध्वज वाहक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति तथा मार्गदर्शन में गायत्री चेतना केन्द्र लेस्टर, यू.के. में दिव्य ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ हुआ। शान्तिकुञ्ज से लाये गए दिव्य ज्योति कलश के भावभरे प्रथम पूजन के पश्चात् उन्होंने जन्मशताब्दी वर्ष के इस विशेष अभियान के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ज्योति कलश यात्रा आत्मशुद्धि से सामाजिक परिवर्तन और नवयुग के निर्माण का संदेश जन-जन तक पहुँचाने की योजना है। हमें इस यात्रा के माध्यम से हर नगर में आत्मशुद्धि के लिए गायत्री उपासना, जीवन साधना, वातावरण के परिष्कार के लिए यज्ञ; सामाजिक परिवर्तन के लिए सामूहिक साधना एवं युग निर्माण सत्संकल्प के पाठ का संदेश देना है।

ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ एक विशाल समारोह से हुआ। इसमें यू.के. के अनेक शहरों से आए मिशन के प्राणवान परिजनों ने भाग लिया। ज्योति कलश के पूजन का अत्यंत भावपूर्ण विधि-विधान शान्तिकुञ्ज से गई प्रो. प्रमोद भटनागर जी एवं श्री परमानन्द द्विवेदी जी की टोली ने सम्पन्न कराया।

कोवेंट्री में पहुँची ज्योति कलश यात्रा का स्वागत-पूजन

लंदन में विश्वशांति एवं भारत की सुरक्षा हेतु दिव्य दीपयज्ञ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की गरिमामयी उपस्थिति में लंदन स्थित मांधाता हॉल में विश्वशांति तथा भारत की सुरक्षा की भावना एवं सामूहिक प्रार्थना के साथ एक विशेष दीप यज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री यज्ञ को मानव मात्र के कल्याण का माध्यम बताते हुए उपस्थित याजकों का मार्गदर्शन किया।

यज्ञ में भाग लेने ब्रिटेन के विभिन्न नगरों से सैकड़ों गायत्री परिजन पधारे।

लंदन स्थित मांधाता हॉल में आयोजित दीपयज्ञ

सभी ने विश्वशांति के साथ-साथ भारतवर्ष की सुरक्षा हेतु विशेष आहुतियाँ अर्पित कीं। सभी को नित्य सामूहिक साधना द्वारा राष्ट्ररक्षा एवं वैश्विक कल्याण हेतु अपने जीवन को समर्पित करने की प्रेरणा दी गई, संकल्प दिलाए गए।

हाउस ऑफ लॉर्ड्स में नैतिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर विचार विनियम

लंदन स्थित हाउस ऑफ लॉर्ड्स में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने लॉर्ड रसेल रूक तथा एआई एण्ड फेथ कमीशन के श्री ऑस्टिन टिफनी से औपचारिक भेंट की। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक जीवन मूल्यों, अंतरधार्मिक समरसता तथा वैश्विक नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता पर आधारित विचार साझा किए गए।

यह संवाद वैश्विक स्तर पर विज्ञान एवं अध्यात्म के समन्वय की दिशा में एक प्रेरणादायक पहल था, जिससे न केवल नीति निर्माण बल्कि मानवीय मूल्यों को भी नई दिशा मिल सकती है।

बैठक में विशेष रूप से इस बात पर संवाद हुआ कि आध्यात्मिक विवेक को नैतिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Ethical AI) तथा वैश्विक नीति निर्माण से कैसे जोड़ा जा सकता है। सामूहिक करुणा, चेतन नेतृत्व तथा संतुलित तकनीकी प्रगति जैसे विषयों पर भी सकारात्मक चर्चा हुई।

प्रमुख उद्योगपतियों से मुलाकात

लंदन में डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने प्रमुख उद्योगपति श्री फिरोज मिस्त्री जी (शापूरजी पालोनजी ग्रुप) तथा प्रतिष्ठित विधिवेत्ता एवं उद्यमी श्री विजय गोयल जी (सिंघानिया एण्ड कं. के पार्टनर तथा इण्डो-यूरोप बिजनेस फोरम के चेअरमेन-एसोचेम, यूके.) से भेंट की।

श्री विजय गोयल एवं श्री फिरोज़ मिस्त्री के संग डॉ. चिन्मय जी

उनके साथ परम पूज्य गुरुदेव के विचारों पर आधारित आध्यात्मिक नेतृत्व, व्यापार, संस्कृति तथा विश्व कल्याण के लिए भारतीय दर्शन की भूमिका पर सार्थक संवाद हुआ। इस अवसर पर डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें जन्मशताब्दी वर्ष 2026 के संदर्भ में भावी योजनाओं से भी अवगत कराया। दोनों ही महानुभावों ने मिशन के विचारों की सराहना करते हुए सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक सहयोग की संभावनाओं पर रुचि प्रकट की।

माँ भगवती देवी अन्नपूर्णा योजना

शान्तिकुञ्ज ने 3550 बच्चों में स्कूल बैग किट बाँटे

31 मई को खानपुर ब्लॉक के विद्यालयों में बैग वितरण कर रहीं श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी एवं श्री योगेन्द्र गिरि जी

प्रतिदिन 600-700 जरूरतमंदों को भोजन

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज द्वारा जन्मशताब्दी वर्ष 2026 के उपलक्ष्य में 'माँ भगवती देवी अन्नपूर्णा योजना' चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत प्रतिदिन लगभग 600-700 जरूरतमंद लोगों तक निःशुल्क भोजन पहुँचाया जाता है। शान्तिकुञ्ज की टोली द्वारा जिला अस्पताल, कुष्ठ आश्रम, अनाथाश्रम तथा दैनंदिन आवश्यक सेवाओं में तैनात कर्मियों तक, झुग्गी-झोंपड़ियों में यह ताजा भोजन प्रतिदिन प्रातःकाल पहुँचाया जा रहा है।

स्कूल बैग किट वितरण की नई योजना

माँ भगवती देवी अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत 23 मई से विद्यालयों में 'स्कूल बैग किट' वितरण की एक नई योजना आरंभ हुई है। इसके अतंर्गत हरिद्वार जनपद में खानपुर ब्लॉक के विद्यालयों में पहुँचकर छात्र-छात्राओं को यह स्कूल बैग किट दिये जा रहे हैं। प्रत्येक विद्यार्थी को स्कूल बैग दिया गया, जिसमें कॉपियाँ, पेन, पानी की बॉटल आदि आवश्यक शैक्षणिक सामग्री सम्मिलित थी। स्कूल बैग किट पाकर बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

दिनांक 23 मई को प्रथम स्कूल बैग वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। दे.सं.वि.वि. के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी बच्चों को स्कूल बैग किट देने और उन्हें जीवन में महानता के वरण की सत्प्रेरणाएँ देने पहुँचे। उन्होंने खानपुर ब्लॉक के 11 राजकीय विद्यालयों में 981 छात्र-छात्राओं को स्कूल बैग किट दिए।

> "शान्तिकुञ्ज का प्रयास है कि ग्रामीण क्षेत्रों के अधिक से अधिक बच्चों को शिक्षा के संसाधन उपलब्ध कराकर उन्हें आगे बढ़ने के अवसर दिए जाएँ।"
> **श्रद्धेया शैल जीजी**
>
> "देश का हर नागरिक शिक्षित, स्वावलम्बी और संस्कारवान हो, यह समाज का सामूहिक दायित्व है।"
> **आदरणीय डॉ. चिन्मय जी**

इस अवसर पर राजकीय प्राथमिक विद्यालय खानपुर, तुगलपुर, मोहनवाला, गुरुद्वारा बादशाहपुर, मांडोवाला, शेरपुर बेला, चंद्रपुरी कला, चंद्रपुरी खुर्द, नाईवाला, जोगावाला एवं दल्लावाला के शिक्षक, शिक्षिकाओं, नेशनल कॉलेज खानपुर के प्रबंधक श्री घनश्याम गुप्ता, तुगलपुर के ग्राम प्रधान श्री श्यामपाल, ब्लॉक अध्यक्ष श्री केहर सिंह, श्री प्रमोद कुमार, सीआरसी से श्री बबलू सिंह, बीआरसी से श्री पवन वर्मा सहित शान्तिकुञ्ज से श्री अजय त्रिपाठी, श्री मंगल सिंह गढवाल आदि उपस्थित रहे। सभी ने शान्तिकुञ्ज द्वारा समाज में नवचेतना जगाने के लिए किये जा रहे कार्यों की सराहना की और अपने सहयोग का आश्वासन दिया।

दिनांक 26 मई के दिन खानपुर ब्लॉक के 33 प्राथमिक विद्यालयों के 1815 विद्यार्थियों को स्कूल बैग किट दिए गए। यह कार्यक्रम गायत्री विद्यापीठ शान्तिकुञ्ज, व्यवस्था मंडल प्रमुख आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी तथा शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

31 मई को राजकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय खानपुर के विद्यालय में स्कूल बैग किट वितरण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। गायत्री विद्यापीठ शान्तिकुञ्ज की व्यवस्था मंडल प्रमुख श्रीमती शैफाली पण्ड्या जी एवं व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि के नेतृत्व में शान्तिकुञ्ज की टोली पहुँची और वहाँ उपस्थित 12 उच्च प्राथमिक विद्यालयों के कुल 753 छात्र-छात्राओं को स्कूल बैग किट वितरित किए गए।

भ्रामक वेबसाइट्स से सावधान रहें

शान्तिकुञ्ज के नाम से हो रही धोखाधड़ी से बचें

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार एक प्रख्यात आध्यात्मिक एवं सामाजिक संस्थान है, जो युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य और माताजी भगवती देवी शर्मा द्वारा स्थापित किया गया है। यह संस्थान गायत्री साधना, संस्कार, प्रशिक्षण शिविर एवं व्यक्तित्व परिष्कार जैसे कार्यों के लिए देश-विदेश में श्रद्धा का केंद्र है। प्रतिवर्ष लाखों साधक यहां निःशुल्क सुविधाओं का लाभ उठाने आते हैं।

हाल ही में कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा शान्तिकुञ्ज गायत्री परिवार के नाम पर फर्जी वेबसाइट्स बनाकर लोगों को ठगा जा रहा है। इन वेबसाइट्स पर शान्तिकुञ्ज के संस्थापकद्वय के समाधि स्थल की तस्वीरें लगाई जाती हैं और एसी रूम व अन्य विशेष सुविधाओं के नाम पर लोगों से ऑनलाइन बुकिंग के माध्यम से पैसे वसूले जा रहे हैं। जब श्रद्धालु शान्तिकुञ्ज पहुँचते हैं, तब उन्हें इस ठगी का एहसास होता है।

शान्तिकुञ्ज में भोजन, आवास एवं सभी संस्कारों की सेवाएँ निःशुल्क हैं केवल आधिकारिक वेबसाइट का ही प्रयोग करें

शान्तिकुञ्ज परिवार कभी भी किसी के साथ इस प्रकार का व्यवहार नहीं करता है। शान्तिकुञ्ज प्रबंधन स्पष्ट करता है कि गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में स्वीकृति प्राप्त शिविरार्थियों एवं प्रशिक्षणार्थियों हेतु भोजन, आवास और सभी संस्कारों की व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क है। शान्तिकुञ्ज कभी भी ऑनलाइन बुकिंग या शुल्क नहीं लेता है। अधिकृत जानकारी केवल शान्तिकुञ्ज की आधिकारिक वेबसाइट awgp.org या ईमेल- shantikunj@awgp.org से ही प्राप्त करें। समस्त श्रद्धालुओं-आगंतुकों से निवेदन है कि वे सजग रहें, जागरूक रहें और इस प्रकार के धोखाधड़ी से बचें।

देसंविवि एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्त्वावधान में आयोजित हुआ

स्वावलंबी भारत अभियान

राष्ट्र का निर्माण आत्म-सुधार से संभव है।
- आद. डॉ चिन्मय पण्ड्या जी

आद. डॉ. चिन्मय जी मंचासीन गणमान्यों को युग निर्माण सत्संकल्प भेंट करते हुए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 29 मई से 2 जून 2025 की तिथियों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित पाँच दिवसीय 'अखिल भारतीय पूर्णकालिक एवं प्रशिक्षक स्वावलंबी भारत अभियान' सम्पन्न हुआ।

शिविर के प्रथम सत्र को संबोधित करते हुए देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने प्रतिभागियों को परम पूज्य गुरुदेव के उद्घोष 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा' का स्मरण कराते हुए कहा कि राष्ट्र का निर्माण आत्मसुधार से संभव है। उन्होंने सभी को भारतीयता, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों को आत्मसात कर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने की प्रेरणा दी।

संघ प्रचारक एवं अखिल भारतीय संघटक श्री कश्मीरी लाल ने इस कार्यक्रम को स्वावलंबी भारत की दिशा में एक दृढ़ संकल्प बताया। उन्होंने युवाओं से अपने कौशल और संस्कारों से भारत को आर्थिक और नैतिक रूप से सशक्त बनाने का आह्वान किया।

अखिल भारतीय सह संयोजक (स्वावलंबी भारत) श्री जितेन्द्र गुप्ता, स्वर्णिम भारत वर्ष फाउंडेशन के चेयरमैन एवं वर्ग पालक श्री सतीश चावला तथा अखिल भारतीय विचार विभाग प्रमुख एवं वर्ग प्रमुख डॉ. राजीव कुमार आदि प्रमुख रूप से सम्मिलित हुए। इस आयोजन में देश भर से आरएसएस से जुड़े प्रशिक्षक, शान्तिकुञ्ज, विश्वविद्यालय के कार्यकर्त्ता भाई-बहिन उपस्थित थे।

परमात्मचेतना में विलीन हुईं शान्तिकुञ्ज की जीवनदानी देवात्माएँ

श्रीमती कामिनी दीवान

स्व. श्रीमती कामिनी दीवान

शान्तिकुञ्ज के प्रिंटिंग, पब्लिशिंग, डिजाइनिंग विभाग में सेवाएँ प्रदान कर रहे, ग्राम पोंड़(पाण्डुका), जिला गरियाबंद (छत्तीसगढ़) के मूल निवासी श्री पवन दीवान जी की धर्मपत्नी श्रीमती कामिनी दीवान का दिनांक 17 मई 2025 को देहावसान हो गया। सन् 1988 से शान्तिकुञ्ज में जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में समर्पित श्री पवन दीवान के साथ सन् 2001 में उनका विवाह हुआ था। स्व. कामिनी दीवान ने महिला मण्डल के अंतर्गत यज्ञ-संस्कार संचालन, प्रशिक्षण एवं अन्य सेवाकार्यों में बड़ी निष्ठा के साथ अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। बारह वर्षीया बेटी कु. एकता और पति पवन दीवान ने उन्हें मुखाग्नि दी।

श्रीमती ज्योति यादव : शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री रामकृष्ण यादव जी की धर्मपत्नी श्रीमती ज्योति यादव का दिनांक 27 मई 2025 को देहावसान हो गया। 45 वर्षीया श्रीमती ज्योति यादव एवं उनके पति शान्तिकुञ्ज में सन् 2013 से जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सेवा दे रहे हैं। स्व. ज्योति यादव ने शान्तिकुञ्ज में महिला मंडल एवं इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी विभाग में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। इससे पूर्व वे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्थित गायत्री चेतना केंद्र एवं आसपास के क्षेत्रों में गायत्री परिवार की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाते रहे।

स्व. श्रीमती ज्योति यादव

स्व. ज्योति यादव परम पूज्य गुरुदेव के विचार और आदर्शों के प्रति अनन्य भाव से समर्पित रहीं। विगत कुछ वर्षों से गंभीर बीमारी के बावजूद वे सोशल मीडिया के माध्यम से विचार क्रान्ति अभियान को गति देती रहीं। मिशन के आदर्शों के अनुरूप सन् 2005 में शान्तिकुञ्ज आकर ही विवाह किया। जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में रहते हुए शान्तिकुञ्ज की दिनचर्या का पालन और माताजी के चौके में ही भोजन उनकी विशेषता रही।

मुख्य न्यायिक मेजिस्ट्रेट ने समाज को दिखाई जीने की राह

शान्तिकुञ्ज आकर किया दहेज, दिखावा रहित आदर्श विवाह

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में दिनांक 28 मई 2025 को रायपुर (छत्तीसगढ़) के मुख्य न्यायिक मेजिस्ट्रेट (सीजेएम) श्री गिरीश कुमार मण्डावी और कांकेर (छत्तीसगढ़) निवासी सौ.कां. खुशबू नेताम का आदर्श विवाह सम्पन्न हुआ। प्रबुद्ध नवदम्पति और उनके परिवारी जन परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताई गृहस्थ जीवन की आदर्श प्रेरणाओं और प्रेरक वैदिक कर्मकाण्ड से गद्गद थे।

श्री गिरीश मण्डावी जी का बाल्यकाल से ही मन था कि दिखावा, दहेज और आडंबर से दूर रहकर एक आदर्श विवाह संस्कार के साथ परिणय सूत्र में बँधते हुए समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया जाए। शान्तिकुञ्ज में विवाह संस्कार सम्पन्न कराते हुए उन्होंने बड़ी प्रसन्नता के साथ अपना संकल्प पूरा किया। श्रद्धेया शैल जीजी, व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी एवं अन्य वरिष्ठ जनों ने नवदम्पति को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वर्तमान समाज में बढ़ती वैवाहिक कुरीतियाँ और फिजूलखर्ची प्रगतिशील समाज में एक बड़ी चिंता का विषय है। आज समाज को गिरीश मण्डावी जैसे आदर्शनिष्ठ प्रबुद्ध युवाओं की आवश्यकता है, जिनके अनुसरण से समाज में दहेज, दिखावे की कुरीतियों को बदला जा सके। ऐसे प्रगतिशील संस्कार समाज सुधार के बड़े आन्दोलन खड़े कर सकते हैं।

सीजेएम श्री गिरीश कुमार मण्डावी एवं सौ.कां. खुशबू नेताम का शान्तिकुञ्ज में हुआ विवाह संस्कार

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 12.06.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26